Chapter-3

पर्व तृतीय

श्री आत्मानंदजी म.के व्यक्तित्वका मूल्यांकन ज्योतिष चक्रके परिवेशमें

मंगलाचरण

प्रस्ताविक---प्रस्तुत पर्वकी पृष्ठभूमि–कार्य निष्पत्तिके पाच कारण-नियति और ज्योतिषका स्वरूप (परिभाषाके सदर्भमे)-परिभाषा-सामान्य परिचय

विशिष्ट परिचयकी संक्षिप्त रूपरेखा---बारह स्थान, बारह राशि (तालिका), विवक्षित स्थानमे राशि द्वारा फल प्रदान (तालिका), बारह ग्रह-सामान्य परिचय (तालिका), ग्रहोका बलाबल, ग्रहोकी दृष्टि, ग्रहोके पाच प्रकारके पारस्परिक सम्बन्ध (युति, प्रतियुति, दृष्टि, परिवर्तन, एकतर)-स्थानगत राशिके स्वामीका बारह स्थानोमे फलप्रदान-(तालिका), ग्रहोकी दशा–योगिनि, अष्टोत्तरी, बीसोत्तरी-दशाओके अवातर भेद, गोचर ग्रह–पचाग (तिथि, वार-दिन, नक्षत्र, योग, करण) का परिचय-साधारण भाव-विचार अर्थात् फलादेशके मूल्यवान सिद्धान्त–

श्रीमद् आत्मानंदजी म.की जन्मकुंडली और जीवन घटनाओंका मूल्यांकन–

जन्म कुडली चित्र – जन्म कुडलीका विहगालोकन (स्थानके अनुक्रमसे)–प्रथमभावसे प्राप्त फल स्वरूप (बाह्याभ्यतर व्यक्तित्व-चारित्र, स्वभाव, आरोग्य)का विश्लेषण–द्वितीय स्थानसे वाणी-धन-परिवारादि सबधित फलादेश–तृतीय स्थानसे भ्रातृसुख, साहस, पराक्रम, प्रवासादिका निर्देश–चतुर्थ स्थानसे–सर्वागीण सुख–पचम स्थानाधारित बुद्धि-विद्याभ्यास-मत्रविद्या-लागणीशीलतादिका उल्लेख–षष्ठम स्थानसे रोग-बिमारी-शत्रु-साथी-मददनीशोके सुखका अदाज़–सप्तम स्थानसे जाहेरजीवन-दाम्पत्य जीवन–साथी सहयोग–आध्यात्मिकता–सन्यस्त योगादिका निर्धारण–अष्टम स्थानसे आयुष्य-गूढ विद्या प्राप्ति, लम्बी बिमारी आदिका जिक्र–नवम स्थानसे धर्म एव भाग्य सकेत–दसम स्थानसे महत्व एव राजकीय सम्मान, राजद्वारी कार्य, पितृ सुख, यश-मान-प्रसिद्धिके आसार–एकादश लाभ स्थानसे विविध लाभ प्राप्तिका इशारा–द्वादश मोक्ष या व्यय स्थानसे रोग-हानि-व्यय विदेश यात्रादिका निर्णय

तत्कालीन गोचर ग्रहोंका जीवनके विविध प्रसंगों एवं व्यवहार पर असर–

संन्यास योग---श्री चन्द्रकान्त पाठकके लेखाधारित–

निष्कर्ष--विभिन्न महापुरुषोकी जन्मकुडलियॉ

पर्व तृतीय

— श्री आत्मानंदजी म.के व्यक्तित्वका मूल्यांकन- ज्योतिष्चक्रके परिवेशमें ---

"विश्वके कोने कोनेमें छा रहा जो कीर्तिमान;
नभतल भूतल मुग्ध बने हैं तेरा ओजस् तेरी शान;
अंबर अवनिमें अंकित अक्षर कर रहे हैं यशोगान;
जिससे प्रस्फुटित जीवनधारा बह रही जमीं आसमान।"

साम्प्रतकालमें प्रतिदिन ज्योतिष शास्त्रके प्रति आस्था वृद्धिगत होती नज़र आ रही हैं। प्रत्येक कार्य व प्रसंगके लिए भविष्य-कथन पृच्छा होती है। प्रत्युत्तर कथन पर आधारित कार्यक्रम निश्चित करके व्यक्ति अपने जीवनसे अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकता है अथवा हानिसे बच सकता है।

राशि-ग्रह-नक्षत्र आदि नभमंडल स्थित ज्योतिष्-चक्र मानवजीवन पर कब-कैसा, प्रभाव कैसे छोड़ता है?; उसका चार-क्षेत्र, परस्पर-सम्बन्ध आदिका जन-जीवन, समाज-जीवन, राष्ट्र-जीवन, विश्व-जीवन पर किस प्रकार असर होता है-इन सारी बातोंका विश्लेषण हमें इस ज्योतिष-शास्त्रसे प्राप्त होता है।

इन बातों से अवगत होनेके पश्चात् एकदा आचार्य प्रवर श्रीमदात्मानंदजी महाराजजीके साहित्यका अभ्यास करते हुए पूज्य गुरुदेवकी जन्म कुंडली (लग्न कुंडली) के दर्शन हुए। तत्क्षण दिलमें एक भावतरंग उद्‌भवित हुई कि, पूज्यपादजी की जीवन घटनाओंका इस शास्त्रावलम्बनसे जन्म कुंडली पर आधारित मूल्यांकन क्यों न किया जाय ? जिससे यह निश्चित कर सकें कि, *उनके जीवनमें घटित घटनायें उनके जन्मसे ही निश्चित बन चुकी थी, जो उनके पूर्व जन्म-कृत कर्मके फल स्वरूप थीं।*

उनके जीवन प्रसंगों के मूल्यांकन पूर्व ज्योतिष-शास्त्रका संक्षिप्त परिचय ज्ञात करना आवश्यक है। अतएव ज्योतिष-शास्त्रका परिचय अत्र प्रस्तुत करना उचित होगा।

अनादिकालीन संसार व्यवस्थाको नियंत्रित करनेवाले पाँच कारण गीतार्थ जैनाचार्योंने माने हैं *(१) काल (२) स्वभाव (३) नियति (४) पुरुषार्थ (५) कर्म।*[1]

किसीभी कार्यका या प्रसंगका घटित या अघटित होना-इन पाँचके ही अन्वय-व्यतिरेक अथवा सम्मिलन-विघटन पर निर्भर होता है। यथा-जो कार्य जिस <u>कालमें</u> घटित या अघटित होनेवाला होता है, तब उस कार्यके कारणोंका <u>स्वभाव</u> वैसे ही अनुरूप या प्रतिरूप होता है; और उस कार्यके घटित-अघटित होनेका <u>निश्चय</u> होता है। तत्पश्चात् उस कार्यके लिए <u>पुरुषार्थ</u> करनेमें उद्यत होनेसे, पूर्वोपार्जित <u>कर्म</u> संचरित होता है; अन्ततोगत्वा कार्य सम्पन्न होता है। उदा:-किसीभी पदार्थका निर्माण करना है, तो वहाँ *कर्ता, कार्यशक्ति, उपादानकारण (रो. मटिरियल), उपकरण (साधन)* और *स्थान*-ये पांच चीजें आवश्यक हैं। जैसे मकान बनानेके लिए-कर्ता (मकान बनानेवाला मालिक), *कार्यशक्ति*, (मकान निर्माण करनेवाले बढई, मिस्त्री, मज़दूर आदि) *उपादान कारण* (ईंट, चूना, सिमेन्ट, लकडी लोहा आदि) *उपकरण* (फावडा, कुल्हाडी आदि), *स्थान* (जहाँ मकान निर्माण होगा वह जमीन) आवश्यक होता है। इन पाँचोंके सहयोग एवं समन्वयसे ही मकान निर्माण शक्य है, अन्यथा नहीं। इनमेंसे एकभी कम हो या यथास्थित

न हों तब कार्यकी निष्पत्ति असंभव-सी है; वैसे ही उपरोक्त कालादि पाँच कारणके बिना या उनके सम्यक् सहयोगके अतिरिक्त कार्यसिद्धि भी अशक्य-प्रायः होती है।

नियति और ज्योतिषशास्त्रका स्वरूप *(परिभाषाके सदर्भमें)*:-

व्यक्तिके जीवनचक्रके किसीभी प्रसंगको घटित करनेवाले उपरोक्त कालादि पाँच कारणोंमेंसे *'नियति'* (भाग्य) अदृष्ट होता है। कोईभी सासारिक याने छद्मस्थ-अपूर्णज्ञानी व्यक्ति इससे अनभिज्ञ होती है। चूँकि एक क्षणान्तर कौनसी घटना घटित होगी उसका ज्ञान उन छाद्मस्थिकोंको नहीं होता है। इसलिए प्रत्येक पलकी प्रत्येक घटनाये या प्रसंग व्यक्तियोको व्यामोहित करता रहता है। फलतः प्रत्येक प्रसंगसे वह सुख-दुःखादिका विलक्षण अनुभव करता रहता है। भावी जीवन-स्वरूपसे ज्ञात होनेकी जिज्ञासा, नैसर्गिक रूपसे प्रायः सर्वमे समान रूपसे दृष्टिगोचर होती हैं। *इस अदृष्ट भविष्यको प्रत्यक्षकी भाँति दृश्यमान करानेवाली चक्षु सदृश जो सैद्धान्तिक, गाणितिक और तार्किक साहित्य होता है वही 'ज्योतिष-शास्त्र'की संज्ञा प्राप्त करता है।* अन्यथा इसे ऐसे भी प्रस्तावित कर सकते हैं-

पूर्व कर्माधीन व्यक्तिके लिए जीवनमें मिलनेवाले जो शुभाशुभ फल निर्देश और बाह्याभ्यन्तर व्यक्तित्वका निर्देश, स्थान, राशि, ग्रहादि पर अवलम्बित कथन करनेमें सहयोगी सिद्धान्तों एवं तदनुकूल परिणामोंका आकलन जिसमें किया गया है ऐसे ग्रन्थको 'ज्योतिष-शास्त्र' कहा जाता है।

उपरोक्त अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थानादि तीनों अंगो द्वारा किए जानेवाले स्पष्ट फलादेशके लिए ज्योतिष-शास्त्रको पंचांग अर्थात्-*तिथि-वार-नक्षत्र-योग और करण* इन पाँच अंगोंकी सहायता आवश्यक है। इनके बिना ज्योतिष-शास्त्र पंगु हो जाता है। अतएव ज्योतिष-शास्त्रमें पंचांगका भी महत्वपूर्ण स्थान होता है।

ज्योतिष-शास्त्रके इस सामान्य परिचय पश्चात् उसके विभिन्न अंगोंका विशिष्ट परिचय, संक्षिप्त रूपरेखा स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है।

स्थान :- किसीभी व्यक्तिके जन्म समयमें ब्रह्मांडमें ग्रहोंकी स्थितिको प्रदर्शित करनेवाले चार्ट (मानचित्र) को जन्म कुंडली कहा जाता है। उस कुंडलीको बारह विभागोमें विभक्त किया जाता है। प्रत्येक विभागको *भाव-भुवन या स्थान* की संज्ञा दी जाती है जिसके आधार पर निश्चित स्थानसे निश्चित घटनाओंका ज्ञान हो सकता है। व्यक्तिके जीवनके विभिन्न प्रसंगोंका निर्देशन इन स्थानोंके विशिष्ट प्रभावको लक्ष्यमे रखकर प्रस्फूटित किया जा सकता है।- *यथा-*

प्रथम स्थानसे - व्यक्तिका चारित्र, आरोग्य, तिल-मसा-रूप-रंगादि (बाह्य व्यक्तित्व) जीवनमें सुख-दुःखादिका अनुभव आदिका निर्देश मिलता है। शारीरिक अंग-मस्तक (अर्थात् स्वभाव) आदिका निर्देश मिलता है।

द्वितीय स्थानसे - व्यक्तिकी वाणी धन, पारिवारिक सुख एवं गला-आंखका निर्देश मिलता है।

तृतीय स्थानसे- व्यक्ति के साहस पराक्रम बधु-सुख, प्रवास-पर्यटन (एकाध दिनका छोटा प्रवास), नौकरी सबंधित सुख, -स्कध, हाथादिका निर्देश होता है।

चतुर्थ स्थानसे - मकान, जमीन, वाहन, सुख-शांति अभ्यास, विभिन्न डिग्री रूप उच्चपद-प्राप्ति माता, मित्र, श्वसुरादिका सुख-हृदय, वक्षःस्थलादिका निर्देश होता

है।

पंचम स्थानसे - पूर्व जन्म संबंधी निर्देश, बुद्धि, अभ्यास, मंत्र-विद्या, मौलिक सर्जन, संतान सुख, विवेक, व्यावसायिक प्रेक्टिस, विशेष रूपसे शेर-सट्टा-लौटरी आदि, लागणीशीलता एवं पेट सम्बन्धी निर्देश किया जा सकता है।

षष्ठम स्थानसे - रोग, शत्रु, बिमारी, चिंता, शका, नौकरीका सुख, मातुल पक्षीय सुख, कमिशनादि व्यवसाय, कमर-आते आदिके निर्देश मिल सकते हैं।

सप्तम स्थानसे - दाम्पत्य जीवन, रणसंग्राम, कानूनी प्रसंग, व्यापार, जाहेर-जीवन शारीरिक अंग-कटि प्रदेश सम्बन्धित निर्देश किये जाते हैं।

अष्टम स्थानसे - आयुष्य, लम्बी या गंभीर बिमारी, ससुरालका सुख, गूढ़ विद्या, गुप्त धन (अर्थात् बिना मेहनतसे मिलनेवाला या जमीनमें गाड़ा हुआ अथवा किसीसे वारिसदारीके रूपमें मिलनेवाला धन)-गुप्तांगके निर्देश होते हैं।

नवम स्थानसे भाग्य, धर्म, सदाचार, तीर्थयात्रा, विदेशयात्रा, नीति, प्रमाणिकता, भावि जन्मोका एवं शारीरिक अंग-उरु प्रदेशका निर्देश किया जा सकता है।

दसम स्थानसे - व्यापार, कोर्ट संबंधी, कानूनी, सरकारी कार्य, पिताका और सास का सुख, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि-घूंटनोंका संकेत प्राप्त किया जा सकता है।

ग्यारहवाँ स्थान - विविध प्रकारके लाभ, मित्र, बड़ेभाईका सुख-पैरोका निर्देश होता है।

बारहवे स्थानसे - मोक्ष-फल प्राप्ति, रोग, हानि, खर्च, दंड जेलके बंधन, विदेश-यात्रा, दान, चाचाका सुख-पैरोंके तलवे संबंधी संकेत प्राप्त हो सकते हैं।[२]

राशि :-[३]

नाम	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
जाति	क्षत्रिय	वैश्य	शुद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शुद्ध	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शुद्र	ब्राह्मण
रग	लाल	श्वेत	हरा	बदामी	धुँएजैसा	-	काला	सुवर्ण	श्वेत-पीला	काबरा (मिश्र)		
अग	मस्तिष्क	मुख	हाथ	हृदय	पेट	कटि	उरु	गुप्ताग	साथल	घूटने	जंघा	पैर
दिशा-बल	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
स्वभाव	पाप	शुभ	पाप	शुभ	पाप	शुभ	पाप	शुभ	पाप	शुभ	पाप	शुभ
लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
सम-विषम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
जाति	चतुष्पद	चतुष्पद	मनुष्य	कीट	चतुष्पद	मनुष्य	मनुष्य	कीट	मनुष्य जलचर	चतुष्पद जलचर	मनुष्य	जलचर
लबाई	छोटी	छोटी	मध्यम	मध्यम	लम्बी	लम्बी	लम्बी	लम्बी	मध्यम	मध्यम	छोटी	छोटी
स्वभाव	चर	स्थिर	उभय	चर	स्थिर	उभय	चर	स्थिर	उभय	चर	स्थिर	उभय
सज्ञा	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव
तत्त्व	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल
स्वामी	मगल	शुक्र	बुध	चद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु

राशियोंका सामान्य स्वरूप-परिचय उपरोक्त तालिका से ज्ञात हुआ।

संपूर्ण आकाशको चक्र स्वरूप असत् कल्पना करके, ३६०° का मानकर उसके बारह विभाग किये जाते हैं। अतएव प्रत्येक विभागको तीस अंश प्राप्त होते हैं। उन विभागोको ही राशि संज्ञा दी जाती है।[४] मेषादि बारह राशियाँ मानी गयी हैं।

राशि--यह ग्रहोंका फलक अथवा विहार स्थान है। जैसे श्वेत परदे पर रंगीनचित्र उभार पाता है वैसे ही किसीभी ग्रहकी निजी सत्ता और शक्तिके निखारका सम्पूर्ण आधार राशि पर निर्भर है । अतएव राशि विषयक ज्ञान आवश्यक बनता है ।

इसतरह प्रत्येक स्थान व राशिके स्वरूपका सामान्य परिचय प्राप्त कर लेनेके पश्चात् अब कौनसी राशि, कौनसे स्थानमे विशिष्ट रूपसे कौनसा फल प्रदान करती है यह निम्न तालिकासे स्पष्ट करते हैं --[५]

	मेष राशि	वृषभ राशि	मिथुन राशि
प्रथम (लग्न)	कफ प्रकृति, क्रोधी, मंदबुद्धि, कृतघ्नी, स्त्री-नौकरादिसे पराजित, लालवर्णी, स्थिरता धारक	हृदयरोगी, दुःखी स्वजनो से अपमानित, मित्रका वियोग, शस्त्रसे घात पाये, कजियाखोर, धनका नाश पानेवाला	स्त्रीमें प्रीति, राजासे पीड़ा चाकर, गौरवर्णी, मीठी जबानवाला, आनंदी, योगी, गायक,
द्वितीय (धन)	पुत्रवान, नीतिवान, अच्छा पंडित, सुखी, अच्छे कार्यसे धन पानेवाला	खेती करनेवाला, सुखी, जौहरी के व्यवसायसे सुखी बलवान	स्त्रीके धनका भोगी, अच्छे मित्रोवाला, सुखी, अलंकारादि पहननेका शोकीन
तृतीय (पराक्रम)	धार्मिक, अनेक विद्यावान, राजादिसे पूजनीय, परोपकारी	इज्जतवान, पंडित, प्रतापी, राजा के साथ मैत्री, धनवान, यशस्वी, कवि	सत्यवादी, उदार, कुलवान, राजाका पूजनीय, स्त्रीका वल्लभ, श्रेष्ठ सवारीवाला
चतुर्थ (सुख)	पशु और स्त्रीसे सुखी आप कमाई भोगनेवाला	व्रत-नियमादि से सुखी, राजा का सेवक, पराक्रमी पूजनीय	वन्यपदार्थ, फूल, वस्त्रादिके व्यापारसे सुखी, अच्छा तैराक, स्त्री धनका भोगी
पचम (तनय)	प्रिय पुत्रयुक्त चित्तवाला, देवादि अन्योंसे सुखी, पापी एवं व्याकुल चित्तवाले के परिचय करनेवाला	सुदर, संतान रहित, पति धर्ममे तत्पर, शोभायुक्त, लडकियोंवाला होता है।	मन वांछित सुख प्रापक, गुणवान, बलवान, स्नेहल स्वभाववाला, पुत्र सुख पानेवाला
षष्टम (रिपु)	अनेक शुत्रवाला होता है।	बंधुवर्गमें एवं पुत्रवधुओंसे वैर होता है।	स्त्री, पापी, वैश्य, नीच, मनुष्योके संगसे-उनके कारण वैर बाधता है।
सप्तम (जाया)	क्रूर, दुष्टा, पापी कठोर हृदया, घातकी धनलोभी इच्छित कार्य सिद्ध करनेवाली -स्त्रीका पति होता है	रूपवती नम्र, पतिव्रता, सद्गुणी अनेक सतानवाली देव-गुरु भक्तिकारी स्त्रीका पति होता हैं।	धनवान, गुणवान, रूपवान, विनयवान धार्मिक वृत्तिवान होता है। उसे गुणरहित पत्नी मिलती है।
अष्टम (आयु)	परदेशमे दुःखदायी बात श्रवणसे मूर्छा या रोगसे मृत्यु होता है। धनवान होने परभी दुःखी-	कफ विकार, भोजन-विकार पशु या दुष्टजनोके सगमे स्वदेशमे रात्रीमे मृत्यु पाता है।	दुष्ट संगत, लाभोत्पन्न, रसोत्पत्ति, गुप्तरोग, हरस, डायाबिटिस (प्रमेह) आदि रोगोके कारण मृत्यु पाता है।

नवम् (भाग्य (धर्म)	दयावान, विवेकी, गाय-भैंसादि जानवरोंका दाता अथवा उनका पोषक होता है।	धार्मिक, अधिक धनवान, विचित्र प्रकारके दान-दाता, गौ दान, भोजन, वस्त्रादि दान-दाता	धर्मी, शांत प्रकृतिवाला, याचकोंको दान-दाता, ब्रह्मभोज कर्ता, और गरीब पर दयावान होता है
दसम (कर्म)	अधर्मी, दुष्ट, प्रपची, अच्छे व्यक्तियोंका भी निंदक अभिमानी होता है।	व्यय युक्त, कार्यवान, साधुजनो पर दयावान, अभ्यागत्-देव-गुरु आदिको दान-दाता, ज्ञानवान, सत्पुरुषोसे प्रीतिकर्ता	गुरु दृष्ट-उत्तम कर्म कर्ता, कीर्तिवान्, प्रेमपूर्ण, खेतीका व्यवसाय करनेवाला होता है।
ग्यारह (लाभ)	जानवर, राजसेवा और परदेशगमनसे लाभान्वित होता है।	श्रेष्ठ मनुष्य, और स्त्रीसे एवं अच्छे मनुष्योको दान प्रदान करनेसे लाभ प्राप्त करता है।	लाभवान, सदा स्त्री वल्लभ, वस्तु, पैसादिसे सुखी, और लोक प्रसिद्ध होता है।
बारह (व्यय)	सुख, कपड़े, भोजन, पशुलाभ, अनेक पराक्रम आदिमें व्यय करता है।	विचित्र वस्त्र, स्त्री, राज्य-लाभ, पराक्रम, विवादादि मे धन व्यय करता है।	व्यभिचार, पापकार्य, हाथी आदिके व्यापारमें धन व्यय करता है।
	कर्क राशि	सिंह राशि	कन्या राशि
प्रथम (लग्न)	गौरवर्णी, दानवीर, शुरवीर, धार्मिक, दयावान्, बुद्धिवान्, पित्त प्रकृतिवान्, प्रगल्भ, अच्छे मनुष्योंसे सेव्य	पांडुरोगी, घमंडी, मांसाहारी, रसिक, शुरवीर, ज्यादातर पैदल चलनेवाला पित्ताग्नी से दुःखी	कफ-पित्त प्रकृति, डरपोक स्त्रीसे जीता हुआ, नालायक, मायावी, सुदर कांतिवान
द्वितीय (धन)	पाणीसे डरनेवाला, बच्चो से प्रीति कर्ता, नीतिवान, सुखी, वानस्पत्य पदार्थसे धन प्राप्त करनेवाला	परोपकारी, चतुर, स्वकमाई से जीवन बीतानेवाला बनवासीसे धन-मान प्राप्त कर्ता-	राजासे जेवरात आदि प्रापक धन प्राप्त करनेवाला और समृद्धिवान होता है।
तृतीय (पराक्रम)	वैश्योंसे मैत्री करनेवाला, धार्मिक, वृत्तिवान, अच्छा स्वभाव, खेती के व्यवसाय वाला, आनंदी होता है।	बूरे मित्रोकी संगत, प्रपंची, धनका लोभी, पापी, शुरवीर घमंडी, लेकिन तुच्छ स्वभाववाला नही	शस्त्रप्रिय- क्रोधी, अधिक मित्रोंवाला, देवगुरु भक्तिकारक अच्छे स्वभाववाला
चतुर्थ (सुख)	रूपवान, गुणवान, विद्यावान्, नम्र स्वभावी, स्त्रीका वल्लभ सर्वको प्रिय	क्रोधी, निर्धन, बूरे स्वभाववाला संतानमे लड़कियाँ होती हैं।	चुगलीखोर, कपटी, चोर, प्रपंची, मूर्ख, दुःखी, धन के लिए दुष्टोका सगी
पचम (तनय)	यशस्वी, अनुभवी, प्रसिद्ध होनेवाला, विनयवान पुत्रवाला, और धनवान पुत्र वाला होता है।	क्रूर, क्रोधी, मांसप्रिय, परदेशमे रहनेवाला, अधिक खानेवाला पुत्रवान्, अच्छी आख वाला	पुत्र रहित, पति को प्रिय, चतुर, पुण्यवान, पापरहित- ऐसी पुत्रीओवाला होता है।
षष्ठम् (रीपु)	अकस्मातसे भयभीत, ब्राह्मण- राजा-महाजनादिकी मित्रतासे समभावमे रहे।	स्त्री से शत्रुता भाईके उपार्जित धन जमीनादिके निमित्त वैर बांधे।	स्वजनोके सगसे या दुष्टाचारी नीच आश्रयरहित वेश्याओसे वैर।
सप्तम (जाया)	मनोहर, सौभाग्यवान गुणवान होता है। कलक रहित अच्छी स्त्रीवाला होता है।	तीव्र स्वभावी शठ, दुष्टा, परगृहकी गमक द्रव्यलोभी, दुर्बल स्त्री प्राप्त करता है।	रूपवान सौभाग्यवान, मिष्टभाषी, चतुर, सुदर, भोग-धन-नीतियुक्त स्त्री प्राप्त करता है।

अष्टम (आयु)	पाणी, जहरी ले जंतु, सर्पादिसे या अन्यके हाथोंसे परदेशमें मृत्यु पाता है।	जहरीली चिंटियाँ, सर्पादि, जानवरसे, जंगलमें या चोरसे मृत्यु प्राप्त करता है।	अत्यन्त विलासी, अपने चित्तसे या स्त्रीओंको मारनेसे अथवा पत्नी के जहर देनेसे मृत्यु होती है।
नवम (भाग्य-धर्म)	व्रत-उपवासादि विविध धर्माचरण कर्ता, पवित्र तीर्थस्थान या बनमें बसनेवाला होता है।	स्वधर्म क्रिया रहित और पर धर्मपालक, विनय रहित होता है।	स्त्री-धर्मकी सेवा करनेवाला, अनेक जन्मोंसे भक्ति-रहित, पाखडी अन्य दर्शनीयोंका सहायक होता है।
दसम (कर्म)	मनोहर कुएँ, वाव, तालाब, आदि पानीके स्थान बनानेवाला दयावान सत्पुरुष होता है।	क्रूर, पापी, दुष्ट, पराक्रमी, हिंसक, नित्य निंदक होता है।	दुष्ट, भक्ति न माननेवाला, तुच्छ वीर्यवान, निर्धन होता है। घरमें उसकी पत्नीका हुक्म चलता है।
ग्यारह (लाभ)	सेवा-खेती-शास्त्र-साधु पुरुषोसे लाभ प्राप्त करता है।	निंदासे अनेक मनुष्योंके बंधन वध-परिश्रमसे और विदेशगमन से लाभ प्राप्त करता है।	अनेक आराधना, शास्त्रादिसे विनय-अद्भूत विवेकसे, लाभ प्राप्त करता है।
बारह (व्यय)	देव-गुरु-पूजा, धर्मक्रिया, सत्पुरुष प्रशंसामे धन व्यय करता है।	संदेह रहित रूपवान, अत्यंत क्रोधी, कुकर्मी, और चोरी करनेसे जातक निंदनीय बनता है।	स्त्रियोंमें उत्साहसे, विवाह आदि एव उत्तम कार्योंसे, सूत्र प्रभाव या साधु सगतसे धन व्यय करता है।

	तुला राशि	वृश्चिक राशि	धन राशि
प्रथम (लग्न)	कफ रोगी, सत्यवादी स्त्रीसे प्रीति रखनेवाला, राजातुल्य, देवादि पूजनमें तत्पर	क्रोधी, आयुष्यवान, धर्मप्रेमी, राजाका पूज्य, गुणवान, शत्रुसे सदा विजयी होनेवाला होता है।	राजा तुल्य सुखी, कार्यदक्ष, देवगुरु प्रीतिकारक, सुखी मित्रोवाला, घोड़े जैसी जंघावाला
द्वितीय (धन)	पुण्यसे प्राप्त धनवान, पत्थर मिट्टीके बर्तन, खेती आदि से धन प्राप्ति, आपकर्मी धन भोगी होता है।	स्वधर्म पालक, स्त्रीका भोगी देवगुरु भक्तिकारक, विचित्र वाणी बोलनेवाला होता है।	धैर्यसे धन प्राप्ति, यशस्वी, तेल-घी आदि द्रव पदार्थों और धर्मविधि से द्रव्य-लाभ प्राप्त करनेवाला।
तृतीय (पराक्रम)	दुष्टोंके साथ मित्राचारी, अत्यत विषयी, कम सतति वाला होता है।	दुष्ट और दरिद्र मित्रोंसे मैत्री, पापी, कजियाखोर, जो काममे बेदरकार हों उनसे विरोध रखनेवाला	शूरवीरोंसे मित्राचारी, राजाका सेवक, स्व धर्मसे प्रसन्न चित्त, दयावान, रण सग्राममें चतुर
चतुर्थ (सुख)	सरल स्वभावी शुभकार्यमे चतुर, विद्यासे नम्र सर्व मनुष्योंका प्रिय	चचल, डरपोक सेवा परायण गर्व रहित, पराक्रमी छिद्रान्वेषी, कम अक्कल-	लश्करी कार्य, घोडोंके व्यापार स्व प्रताप निबधसे, सेवासे सुख प्राप्त करता है।
पचम (तनय)	सुदर स्वभाववाले मनोहर स्वरूपवान क्रिया युक्त योग्य पुत्रवाला होता है।	मनोहर अच्छे स्वभाववाला, अनजानेमे दोष करनेवाला स्वधर्ममे नम्र और पुत्र रहित होता है।	विचित्र ईच्छावान्, शत्रुरहित, धनुर्धारी सेवाप्रिय, राजासे मान प्रापक पुत्रवान होता है।

षष्ठम् (रिपु)	घरमें रहे हुए धनके कारण, धर्मके कार्य-हेतु रूप, बंधुवर्गसे, निज स्थान से वैर प्राप्त होता है।	द्वि-जिह्विय सर्प, सिंह, मृग, चोर से, अनाज द्वारा विलासिनी स्त्रीओंसे वैर प्राप्त होता है।	अच्छे मनुष्योंसे, हाथी-घोड़ादि अच्छे पदार्थोंसे, अन्य को ठग लेनेसे वैर प्राप्त करता है।
सप्तम (जाया)	गुणों से अभिमानी, धर्म परायण, पुण्यप्रेमी, अच्छे पुत्र जन्मदात्री, जमींदार अनेक प्रकारकी स्त्रीवाला	विकल स्वभाव, कृपण, दुर्भागी, अभिमानी अनेक दोषवाली स्त्रीको प्राप्त करता हैं।	दुष्ट स्वभाव वाली, निर्लज्ज, पर दोष संग्रही, कजियाखोर और अभिमानी स्त्री प्राप्त करता है।
अष्टम् (आयु)	मनुष्योंसे, व्रतसे, मल कोपसे अधिक बुखारसे मृत्यु पाता है।	खून-विकार, रोग, कीड़े या विषसे अपने स्थानमें मृत्यु पाता है।	बाण से, गुप्तांगोके रोगसे, पशु-जलचरोसे अपने ही स्थानमे मृत्यु पाता है।
नवम् (भाग्य-धन)	धर्मी, देव-गुरु भक्तिकारक, मनुष्य प्रति प्रेम धारी अद्भूत	पाखंड धर्ममें तत्पर, औरोंको दुःखदाता, भक्ति रहित, अन्यका पोषण न करनेवाला होता है।	धर्मी, पितृदेवोंका पूजक, मन घड़त शास्त्र रचयिता, ज्यादा संतोषी, त्रिलोक प्रसिद्ध
दसम (कर्म)	व्यापारी, धर्मात्मा, नीतिवान, इष्ट पदार्थ-सपत्तियुक्त होता है।	अच्छे कार्यकर्ता, माननीय, देव-गुरु न माननेवाला निर्दयी और नीति हीन होता है।	पूर्ण ज्ञानवान्, परोपकारी, राजातुल्य, यशवान, चोरी की आदतवाला होता है।
ग्यारह (लाभ)	विचित्र व्यापार, साधुसेवा, विनयसे लाभ, स्वमत-स्तुति करनेसे सुखी होता है।	कष्ट, पापकार्य, सुंदर भाषण, अन्यसे प्रपंच द्वारा श्रेष्ठ लाभ प्राप्तकर्ता हैं।	राजा प्रत्ये विलास, सत्पुरुष सेवा, स्व पराक्रम, आराधना से लाभ प्राप्त करता है।
बारह (व्यय)	देव-गुरु-श्रुति-स्मृति-बंधु निमित्त, यम-नियम द्वारा लड़कों के लिए, सेवाके लिए प्रसिद्ध धन खर्च करता है।	दान-दुःख-दुष्ट मित्रकी सेवा, निंदित कार्य, दृष्ट बुद्धि, चोरीका अधिकार ग्रहण करने से-धन खर्च करता है।	दुष्ट-जन-संग, ठगविद्या, जाति और अधिकारी पुरुषोंकी सेवा और खेती कार्यमें धन व्यय करता है।

	मकर राशि	कुंभ राशि	मीन राशि
प्रथम (लग्न)	संतोषी, चंचल, डरपोक, पापी, कफ-वायुसे पीड़ित लम्बे अवयवोवाला ठग होता है।	स्थिर स्थितिवाला, ज्यादावायु वाला, जलसेवी, उत्तम शरीर रूपवान, स्त्रीवाला अच्छी सगतवाला	पाणीसे प्रीत, नम्र, अच्छा पंडित, अच्छी याददास्त, पतला शरीर, क्रोधी, पित्तरोगी, कीर्तिवान्
द्वितीय (धन)	खेती, परदेशगमनादि अनेक प्रकारसे, प्रपचसे धनोपार्जक राजाकी सेवामे तत्पर होता है।	फल-फूलादिसे धन प्राप्ति बड़े पुरुषादिसे प्राप्त सज्जनोके भोगयोग्य धनवाला परोपकारी।	नियम व्रतसे धनलाभ, विद्या प्रभावसे धन लाभ या माँ-बापके धनसे धनवान होता है।
तृतीय (पराक्रम)	सतानयुक्त अच्छा स्वभाव मित्र और देव-गुरु भक्ति तत्पर धनवान पड़ित होता है।	नियमोका ज्ञाता अत्यत कीर्तिवान, क्षमावान सत्यभाषी मित्रता एव अच्छे स्वभावी गायक अधिकारी दुष्टोका सगी होता है।	अधिक धनवान, पुत्रवान पवित्र धनका सग्राहक, अतिथि प्रेमी, सर्व मनुष्यो का प्रियपात्र होता है।

चतुर्थ (सुख)	जलसेवी, उद्यानादिमें घुमनेसे, वावादिमें स्नानसे, मित्रोंकी सेवा, उत्तमजनोके संगसे अधिक सुखी।	स्त्रियोंके गुणवान, मनो वांछित, मिष्ट-स्वादिष्ट फलादि पदार्थ और उत्साह वर्धक बातोसे सुखी होता है।	जलाश्रयी सुख एवं शनिसे उत्पन्न सुंदर वस्त्रादि पदार्थ, काली वस्तु और धनादि सुखका भोगी होता है।
पंचम (तनय)	पाप, बुद्धि, कुरूप, कायर, प्रताप और तेजहीन, निर्दयी, प्रेमविहीन, ऐसे पुत्रोवाला होता है।	स्थिरता युक्त, गंभीर चेष्टावाले, सत्यभाषी, प्रसिद्ध पुण्यवान, यशस्वी, कष्ट सहनेवाले पुत्रोंवाला	स्त्री-प्रसंगसे सुखी, लालवर्णी, रोगी, कुरूप, मजाकीय स्वभावी, स्त्रीयुक्त पुत्रवाला होता है।
षष्ठम् (रीपु)	धन-घर संबंधी, कारण और बार बार साधु पुरुषोंके संगसे मित्रोंसे वैर प्राप्त करता है।	बलवान राजा, क्षेत्रपाल और बड़े पुरुषोंसे, वाव-तालाबादि से, पानीसे भय प्राप्त होता है।	बच्चे, स्त्री, वस्त्रके कारण से अन्यकी संपत्ति निमित्त शत्रुता प्राप्त होती है।
सप्तम् (जाया)	कपटी-नीच-निर्लज्ज, लालची, क्रूर, दुष्ट स्वभावी, क्लेश करनेवाली पत्नी प्राप्त करता हैं।	दुष्ट स्वभावी, देव-गुरुको खुश करनेवाली, धर्मध्वजा रूप, क्षमावान स्त्रीको प्राप्त करें।	विचारयुक्त, बुद्धिवान, स्वधर्म, कुशल, अविनयी, कजियाखोर, खराब पुत्रवाली स्त्री पाता है।
अष्टम् (आयु)	विद्यावान, गुणवान, मान चाहक, कामी, शूरवीर, विशाल वक्षःस्थल, शास्त्रार्थ ज्ञाता, कलामें चतुर होता है।	घरकी आगसे, अनेक व्रण और विकारोंसे, वायु विकारसे, मेहनतसे परदेशमें मृत्यु पाता है।	संग्रहणी रोग, पित्तकाज्वर, दु:ख, खून विकृतिसे, पानी से, या शस्त्र से मृत्यु पाता है।
नवम (भाग्य-धर्म)	पापी आत्मा, प्रतापी अधर्म करें लेकिन बादमें दुःखी होनेसे खानदानोंका आश्रय कर पक्षका सहायक	अच्छा, धर्मी, वाव-उद्यानादिमें प्रीतिवान, देव-गुरुभक्त होता है।	विविध धर्म कर्ता, सत्पुरुष सेवा और तीर्थाटन से धनवान और सुखी होता है।
दसम् (कर्म)	बड़ा प्रतापी श्रेष्ठ कार्यकर्ता, दुष्टजनोंकी संपत्ति अनुसार चलनेवाला निर्दयी, अधर्मी होता है।	पाखडी, लोभी, अविश्वासी, लोक विरुद्ध चलनेवाला, और ठग होता है।	निज कुलमें गुरुदृष्ट धर्मकर्ता, कीर्तिवान, स्थिर बुद्धि, आदर सत्कारमें तत्पर होता है।
ग्यारह (लाभ)	यात्रा, परदेशगमन, राजसेवा, व्ययानुसार अधिक लाभ प्राप्त करता है।	कुकर्म, पराक्रम, धर्म, विद्याके प्रभावसे लाभ, सज्जनोंका संग प्राप्त करता है	मित्रोंसे, राजाके सन्मानसे, विचित्र (मश्करे) वाक्य बोलने से या नम्रतासे अनेक प्रकारसे लाभ-
बारह (व्यय)	पाप नाशके लिए धन का व्यय, स्वजाति प्रीतको रखनेवाला खेती करनेवाला, निंदित होता है।	सिद्ध, देव, गुरु, तपस्वी आदि और दुष्ट पुत्र एवं खानपानादिमें तथा विवादमे व्यय करता है।	

ग्रह :- राशिकी भाँति आकाशमे पृथ्वीकी तरह बडे आकारके पिंडको ही ग्रह कहा जाता है। वे राशिचक्रके मार्गमे भ्रमण करनेवाले होते हैं। राशि एक ही जगह रहनेसे स्थिर और ग्रह भ्रमणशील होनेसे अस्थिर माने जाते हैं। ज्योतिष शास्त्रानुसार सूर्य-चंद्रादि बारह ग्रह माने गये हैं, जो जातकके जीवनमें निज कर्मानुसार घटित होनेवाली घटनाओकी ओर अपने गुणधर्म और गगन परिभ्रमणानुसार अंगूलि-निर्देश करते हैं।'

इनका सामान्य स्वरूप-परिचय निम्न तालिकासे ज्ञातव्य है -[७]

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
जाति	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शुद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	वर्णशंकर	चांडाल	वर्णशंकर
वर्ण	त्रांबावर्णी	श्वेत	रक्त	हरा	पीला	चित्र-विचित्र	काला	काला	धुँआ जैसा
विकार	खून-पित्त	कफ	पित्त-कफ-खून	वात-पित्त-कफ	वात-कफ	वात-कफ	वायु	वायु	वायु
अंग	मस्तक-मुख पीडे	छाती-कंठ	पीठ-पेट	हाथ-पैर	कटि-जंघा	गुदा-वृषण	घूटने-साथल	हड्डियाँ	-
गुण	सत्त्व	सत्त्व	तमस्	रजस्	सत्त्व	रजस्	तमस्	तमस्	तमस्
दिशा-स्वामी	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुसक	पुरुष	स्त्री	नपुसक	पुरुष	पुरुष
मूल त्रिकोण	सिंह 0°से२०°	वृषभ ३°से३०°	मेष 0°से१२°	कन्या १५°से२०°	धन 0°से१0°	तुला 0°से१५°	कुंभ 0°से२०°	कुंभ	सिंह
धातु	त्रांबा	मणि	सोना	कास्य	रूपा	मोती	सीसा-लोहा	लोहा	नीलमणि
तत्त्व	अग्नि	जल	अग्नि	वायु	पृथ्वी	पृथ्वी	जल	-	-
कारक	आत्मा पिता-पति	माता	भ्रातृ	व्यवसाय मित्र	पुत्र	पत्नी	आयुष्य	-	-
भावका कारक	१,९,१०	४	३,६	४,१०	२,५,९,१०,११	७	६,८,१०,१२	-	-
अधिष्ठायक	अग्नि देव	जल देव	अग्नि देव	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	-	-
शुभाशुभ	अशुभ	शुभाशुभ	अशुभ	स्थितप्रज्ञ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ
पूर्ण दृष्टि	सातवे	सातवे	४-८-७	सातवे	५-९-७	सातवें	३-१०-७	-	-
अपूर्ण दृष्टि	प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से तृतीय और दशम स्थानमे पाव($^1/_4$) पंचम-नवममे अर्धः और चतुर्थ- अष्टममे ३/४ दृष्टि से देखता है।								
योगकारक लग्न	प्रथम	अष्टम	चतुर्थ-पंचम	तृतीय-षष्ठ	नवम-बारह	दसम ग्यारह	द्वितीय सप्तम	-	-
स्वगृही	सिंह	कर्क	मेष-वृश्चिक	मिथुन-कन्या	धन-मीन	वृषभ-तुला	मकर-कुभ	मिथुन-कन्या	धन-मीन
उच्च	मेष-१०°	वृषभ-३°	मकर-२८°	कन्या-१५°	कर्क-५°	मीन-२७°	तुला-२०°	मिथुन-१°	धन-१°
नीच	तुला-१०°	वृश्चिक-३°	कर्क-२८°	मीन-१५°	मकर-५°	कन्या-२७°	मेष-२०°	धन-१°	मिथुन-१°
सज्ञा	मूल	धातु	धातु	जीव	जीव	मूल	धातु	धातु	-
स्वभाव	स्थिर	चर	क्रूर	मिश्र	कोमल	लघु	तीक्ष्ण		
मित्र	च म गु	सू बु	सू च गु	सू च राहु	सू च म रा	बु श रा	शु बु	बु शु श	
सम-विषम	बुध	म गु शु श	शुक-शनि	म गु.श	शनि	बु.श रा	शु बु रा	बु शु श	
शत्रु	शु.श.रा	राहु	बुध-राहु	चद्र	बुध-शुक्र	सूर्य-चद्र	सू च म	सू च म	

नक्षत्र	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आश्लेषा	पुनर्वसु	भरणी	पुष्य	आर्दा	अश्वनी
	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	ज्येष्ठा	विशाखा	पू फाल्गुनी	अनुराधा	स्वाति	मघा, मूल
	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	घनिष्ठा	रेवती	पू भाद्रपदा	पूर्वाषाढ़ा	उ.भाद्रपदा	शततारका	

५ चंद्रकी क्षीण कलामें वह अशुभ बनता है और वृद्धि कलामें चंद्र शुभ बनता है।

• अकेला या शुभ ग्रह के साथ शुभ और अशुभ या शुभाशुभ दोनोंके साथ रहने पर अशुभ होता है।

'सिद्धान्त-सारानुसार' ग्रह नव होते हैं; यथा-सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु।[८] *नये शोधानुसार (पाश्चिमात्य मतानुसार) युरेनस, नेप्च्युन और प्लुटो-तीन ग्रहभी अपना प्रभाव छोड़ते हैं। अतएव बारह ग्रह होते हैं।*

जो ग्रह रात्रिमें नहीं दिखता-अर्थात् दिनमें उदित होता है वह <u>अस्तका</u> ग्रह और जो ग्रह रात्रिमें आकाशमें उदित होता है, वह <u>उदयका ग्रह</u> कहा जाता है।[९]

जातकके जन्म समयमे जन्मकुंडलीमे जो ग्रह बलवान होता है, जातक उसके स्वरूपवाला (जो 'लघुजातक'में वर्णित है तदनुसार स्वरूपवाला) होता है। अगर एकसे ज्यादा ग्रह बलवान हों तब सभी बलवान ग्रहके मिश्र स्वरूपवाला होता है।

<u>बलाबल</u> — सूर्य–गुरु–शुक्र दिनमें, चंद्र-मंगल-शनि रात्रिमे और बुध दिन और रात्रिमें बलवान होता है। प्रत्येक ग्रह अपने दिन, मास, वर्ष, काल, और होरामें बलवान होता है। पापग्रह कृष्णपक्षमें और शुभग्रह शुक्लपक्षमें बलवान होता है। शुक्र, मंगल, सूर्य और गुरु उत्तरायनमें, चंद्र-शनि दक्षिणायनमे और बुध दोनों अयनोंमें एवं यदि नवमांशमें स्वग्रही हों तब बलवान होता है।[१०]

कोईभी ग्रह जब शुभ ग्रहकी दृष्टियुक्त अथवा शुभग्रहकी युतिवाला न हों, लेकिन, नीचका-शत्रुके गृहका, पाप ग्रहसे युति अथवा दृष्टियुक्त, पापग्रहके वर्गमें, संधिमे, अल्पांशमें या अस्तका हो तब शुभ फल देनेमे असमर्थ होता है।

स्वर्गलोकका स्वामी गुरु; नरक का शनि; मनुष्य लोकका चंद्र और शुक्र; तिर्यक् लोकका बुध और पितृओंका स्वामी सूर्य एवं मंगल होता है।

इसके अतिरिक्त फलादेशके समय ग्रहोकी दृष्टि और उनके पारस्परिक संबंधको भी दृष्ट्यान्तर्गत किया जाता है। इतना ही नही इनको अधिक महत्वपूर्णभी माना जाता है क्योंकि कई बार इनके ही कारण फलादेशमे पूर्व-पश्चिमका अंतर नजर आता है।

ग्रहकी दृष्टि—शुभ स्थानमे अशुभ ग्रहकी अशुभ दृष्टि होनेसे उस शुभ स्थानसे मिलनेवाले शुभ फलमे हानि प्राप्त होती है अथवा अशुभ स्थानमे शुभ ग्रहकी शुभ दृष्टि अशुभ फलमे हानि कर्ता है अर्थात् जातकको शुभ ग्रहकी शुभ दृष्टिसे अशुभ स्थानका फल हानिमे नही प्रत्युत लाभरूप प्राप्त होता है।

जो ग्रह जिस स्थानको पूर्ण दृष्टिसे देखे तब उन स्थानोमे उनका अपना विशिष्ट प्रभाव

छोड़ते है। कोईभी ग्रह अपने स्थानसे द्वितीय-षष्ठम्, एकादश और द्वादशवें स्थान पर दृष्टि नहीं करता है। सूर्य-मंगल की उर्ध्व, शक्र-बुधकी तिर्यक्, चंद्र और गुरुकी सम (सामने), और राहु-शनिकी दृष्टि निम्न मानी गई है।

ग्रहका पारस्परिक संबंध--- ये संबंध पाँच प्रकारके माने गये हैं-[11]

(i) युति - एक स्थानमे एकसे अधिक ग्रहोंका बिराजमान होना।

(ii) प्रतियुति- एक ग्रह अपने स्थानसे बराबर आमने सामने याने सप्तम् स्थानमें रहे हुए ग्रहकी और जो संबंध रखता है।

(iii) दृष्टि - प्रत्येक ग्रह अपने स्थानसे जिस स्थानको और जिस ग्रहको देखता है उस स्थान या ग्रहके साथ उसका दृष्टि संबंध होता है ।

परिवर्तन--- स्थानाश्रयी परिवर्तन-जैसे गुरु ग्रह मंगल ग्रहके गृहमें और मंगल ग्रह, गुरुके गृहमें बिराजमान हों; इन दोनोका परस्पर असरकर्ता जो संबंध होता है वह परिवर्तन संबंध कहलाता है।

एकतर --- इस संबंधमें **One Sided Relation** की भाँति एक ओर से ही संबंध स्थापित होता है। दूसरा, सामनेवाला संबंध नहीं रखता है। इसके भी दो प्रभेद है -एकतर दृष्टि सम्बन्ध और एकतर स्थान सम्बन्ध।

एक ग्रह जिस स्थान पर दृष्टि करता है, उसी स्थान पर रहा हुआ ग्रह प्रथम ग्रह पर दृष्टि नहीं करता है-जैसे-मंगल चौथी दृष्टिसे जिस ग्रहको देखता है, उस चौथे स्थान पर रहा वह ग्रह मंगलकी ओर दृष्टि नहीं करता है। इस तरह यह एक ओरका होनेसे एकतर दृष्टि सम्बन्ध बनता है।

एक ग्रह जिस ग्रहके गृहमें बैठा हों, वह ग्रह उसीके गृहमें न रहकर अन्यके गृहमें बैठा हों-जैसे-गुरु प्रथम स्थानमें अर्थात् मंगलके गृहमें रहा हुआ है, लेकिन मंगल, गुरुका नवम् या द्वादशम् स्थानमें न रहकर पंचम स्थानमें बिराजमान हुआ हो तब यह एकतर स्थान सम्बन्ध होता है।

जिस स्थानमें जो राशि रही हुई है उस राशिका स्वामी बारह स्थानमें से जिस स्थानमें बिराजित हों वहाँ यह क्या फल प्रदान करता है तत्संबंधी तलिका दृष्टव्य है।[12]

	प्रथमभाव	द्वितीय भाव	तृतीय भाव
लग्नेश	नीरोगी, आयुष्यवान, बलवान, राजा अथवा जमीदार होता है।	धनवान, आयुष्यवान, बलवान राजा वा जमीदार धार्मिक-	अच्छेभाई-मित्र, दानवीर शूरवीर बलवान धार्मिक होता है।
धनेष	कृपण, व्यवसायी, धनवान अच्छा कार्यकर्ता प्रसिद्ध सुखी	व्यवसायी लाभवान अपराधी, नीच अनर्थकारी उद्वेगी, अधिक भूखा होनेवाला होता ही।	क्रूरसे-भाईसे क्लेश नही शुभसे-राजासे विरोध मगलके कारण चोर होता है।

पराक्रमेश	वाणीसे विवादी, लंपट, झघडालु, सेवादार, निंदक होता है।	क्रूर से भिखारी, निर्धन, अल्पजीवी, भाईका विरोधी, शुभसे-लक्ष्मीवान्	मध्यम पराक्रमी, श्रेष्ठ-मित्र-बंधु, देव-गुरु-पूजक, राजा से लाभ।
सुखेश	पिता-पुत्र परस्पर प्रीति, पितासे प्रसिद्धि, पिताके संबंधीओमें वैर	क्रूरसे-पिताका विरोधी, शुभ से पितृ-आज्ञापालक प्रसिद्ध धन-पिता भोगे.	पिता को दुःखदायी, उनसे झगडे, चाचाओंको मारनेवाला-
तनयेश	प्रसिद्ध, शास्त्रज्ञ, अच्छे कार्य प्रिय,बालक-पुत्रवान	क्रूरसे-निर्धन, शुभसे-हाथ-दर्द, कलावान, प्रसिद्ध गायक	मिष्टभाषी, प्रसिद्ध, उसके पुत्र उसके भाईके पालक होते है।
षष्ठमेश	नीरोगी, बलवान, परिवारको दुःखदायी, कठिन परिश्रमी, शत्रुनाशक, आपकमाईसे धनवान, मनस्वी	दुष्ट, चतुर, संग्रही, रोगी शरीर, प्रसिद्ध मित्रो का धन हरनेवाला	सज्जनोंको दुःखदायी, स्वजनोंका नाशक और संग्राममें दुःखी
जायेश	परस्त्रीगामी, स्वस्त्री भोगी, दिलगीर, रूपवान, स्त्रीके आधीन	पुत्रैच्छुक, स्त्रीसे धन प्राप्ति, दुष्ट स्त्री, स्त्री का त्यागी	रूपवान स्त्री, देवरकी प्रेमी होने से दुःखी, भातृप्रेमी, क्रूरसे निज स्त्री मित्रगामी बने।
अष्टमेश	संकट, लम्बी बिमारी, चोर, दुष्ट कार्यशील, नृपसे धनलाभ	क्रूरसे-अल्पजीवी, शत्रुवाला, चोर, शुभसे-शुभफल, राजा से मृत्यु	भाई-मित्रोंका विरोधी, दुष्टभाषी, शारीरिक नुक्स भाई-हीन
भाग्येश	देव-गुरुको माननेवाला, शुरवीर, कृपण, अल्पभोजी, बुद्धिमान, राजाका कार्य करनेवाला	स्त्री व्यभिचारी, सुकृत कर्ता, अच्छा स्वभाव, मुखमें पीड़ा, पशु से दुःखी	रूपवान, परिवारका प्रिय और रक्षक, अंत समय तक भाईका सुख रहे।
कर्मेश	माँ से वैर, पितृसेवी, पिताकी मृत्यु के बाद माता व्यभिचारीणी बने	माता पाले, माताका विरोधी, लोभी, अल्पभोजी, प्रसिद्ध	माँ और संबंधीओंका विरोधी, चाकर कार्य शक्ति हीन, मामा पाले
लाभेश	अल्पायुषी, बलवान, दातार, तृष्णा-दोषसे मृत्यु, शुरवीर, श्रेष्ठ भाग्यवान्	आप कमाई, अल्पायुषी, अल्पभोजी, आठ मनुष्योंका पालक, क्रूरसे-रोगी, शुभसे-धनवान	अच्छे भाईयोंका प्रिय, भातृ धन रक्षक, भाग्यवान क्रुरसे बंधु एवं शत्रु कुल नाशक
व्ययेश	विदेशगामी, सुंदर, रूपवान, श्रेष्ठवाणी, वादी, गुप्तदोषी, दुष्ट संगत, नपुंसक	कृपण, कटुभाषी, खराब फल पानेवाला, शुभसे-निर्धन, राजा और चोरसे डरे	क्रूरसे-भाई रहित, शुभसे-धनवान, थोड़े भाई, भाईसे दूर बसनेवाला कृपण होता है।
	चतुर्थ भाव	पंचम भाव	षष्टम भाव
लग्नेश	राजाका प्रिय, अच्छी कमाई पितासे लाभ, माँ-बापका सेवादार, अल्पभोजी होता है।	अच्छे पुत्रवाला, धनवान, त्यागी, प्रसिद्ध, अच्छी आय कर्ममें प्रीति-	नीरोगी, जमीदार, लोभी, बलवान, धनवान, शत्रुनाशक, अच्छे कार्य करनेवाला अच्छे मित्र
धनेश	पितासे लाभ, सत्यवादी दयावान, आयुष्यवान क्रूर ग्रहसे माताकी मृत्यु होती है।	धनवान, पुत्रवान, श्रेष्ठ कार्योमे प्रसिद्ध, कृपण और दुःखी होता है।	धन संग्रही शत्रुनाशक शुभ ग्रहसे-जमीन लाभ दाता और क्रूर ग्रहसे- निर्धन होता है।
पराक्रमेश	पिता भाई सहोदरसे सुखी माता का वैरी पिताका धन खा जानेवाला होता है।	बंधु, पुत्र, भाईसे सुखी आयुष्यवान परोपकारी होता है।	भाई से विरोध, आँखका रोगी जमीन से लाभ रागी

सुखेश	राजा से मान, पिताको लाभदायी, प्रसिद्ध, धार्मिक, धनवान और सुखी होता है।	पिताको लाभदायी, आयुष्यवान, प्रसिद्ध, पुत्रोंका पालक, अच्छे पुत्रोवाला होता है।	क्रूरसे-माता के धनका नाश, पिताको दोष देनेवाला, शुभसे धन-संचय करनेवाला होता है ।
तनयेश	पितृ-कार्य प्रिय, पिताका पाला हुआ, मातृ-भक्त, क्रूरसे माँ-बापका वैरी	बुद्धिमान, शुभवचनी, प्रसिद्ध पुत्रवान, सज्जनोंमें प्रसिद्ध	शत्रुवाला, मानहीन, क्रूरसे रोगी और निर्धन होता है।
षष्ठमेश	पिता-पुत्र परस्पर वैरी, उसका पिता या पुत्र रोगी चीर स्थायी हो ऐसी लक्ष्मी प्राप्त करनेवाला	पिता-पुत्र परस्पर वैरी, क्रूर से पुत्रसे पिताकी मृत्यु, शुभसे-धन रहित, दुष्ट, पदवीधारी कपटी होता है।	नीरोगी, शत्रुसे सुखी, कृपण, जन्मसे खेदरहित, दुष्ट स्थानवासी होता है ।
जायेश	चंचल, पितृ-वैरी, स्नेहल, उसका पिता- मृदुभाषी, उसकी स्त्रीको उसका पिता (श्वसुर) पाले	सौभागी, पुत्रवान, हठी, उसकी स्त्रीको पुत्र पाले।	स्त्रीका वैरी, स्त्री रोगी होती है, क्रूर ग्रहसे-स्त्री संग से मृत्यु
अष्टमेश	पिताका शत्रु, पिता का धन ले लेनेवाला, पिता रोगी, पितासे झगड़े	क्रूरसे-पुत्ररहित, शुभसे-शुभ फल, पुत्र जीवित नहीं रहते हैं। (यदि जीये तो धूर्त होते है।)	सूर्य-राजा का विरोधी, गुरु-खेद, शुक्र-नेत्रदोष, चद्र-रोगी, मंगल-क्रोधी बुध-साप से डर शनि-मुखमें पीडाकार होता है।
भाग्येश	पितृसेवी, प्रसिद्ध, सुकृत्य कर्ता, पितृकर्म प्रेमी	धार्मिक, देव-गुरु पूजक, रूपवान, धार्मिक, पुत्रवान	शत्रुके सामने नम्र, पापी, कला रहित, निंदा प्रिय
कर्मेश	सुखी, सच्चारित्री, माँ-बाप का सेवक, राजासे मान प्राप्त करनेवाला।	सुकृत कर्ता, मश्करा स्वभाव, राजासे लाभ, गायक-वादक, माता का पाला हुआ।	शत्रुसे डरपोक, लोभी, निर्दयी, निरोगी, कजियाखोर
लाभेश	लम्बी आयु, पितृभक्त, चतुर, धर्मप्रेमी, धर्मसे लाभान्वित	पिता-पुत्र परस्पर प्रीति समानगुण-अल्पायुषी	लंबी बिमारी, ज्यादा शत्रु, क्रूरसे-विदेशमे चोरके हाथसे मृत्यु होती है।
व्ययेश	कृपण, रोगसे भय, सुकृत कर्ता, पुत्र से मृत्यु, निरन्तर दुःखी	क्रूरसे-पुत्रविहिन, शुभसे-पुत्रवान, पितृधनसे सुख, भोगी, सामर्थ्य रहित	क्रूरसे-कृपण नेत्रदोष, अल्पायुषी, शुक्रसे-अंध होता है।

	सप्तमभाव	अष्टम भाव	नवम भाव
लग्नेश	तेजस्वी, अच्छा स्वभाव, रूपवान, अच्छे स्वभावकी पत्नीवाला	लोभी, धनवान आयुष्यवान क्रूरसे-एक आँख से काना, शुभसे अच्छा आदमी होता है	ज्यादाभाई, अच्छे मित्र, पुण्यवान, अच्छा स्वभाव, धर्ममे प्रसिद्ध तेजस्वी
धनेश	श्रेष्ठ विलासी, लोभी स्त्री वाला, पाप ग्रहसे बाँझ स्त्रीवाला होता है।	पाखड़ी, आत्मघाती भाग्यभोगी पराये धनके लिए हिंसक होता है।	शुभसे-दानी प्रसिद्ध वक्ता क्रूरसे-दरिद्र भिखारी आडबरी

पराक्रमेश	सुंदर स्वभाव, सौभाग्यवान स्त्री, क्रूर ग्रहसे-देवरके घरमें रहनेवाली स्त्री-	भाई की मृत्यु, क्रूरसे-अल्पायु, हाथमें नुक्स, शुभसे-ज्यादा दोष नही होते हैं।	क्रूरसे-भाई त्यागते है। शुभसे अच्छे भाई, धनवान, भाईकी सेवा करे।
सुखेश	क्रूरसे-पत्नी, श्वसुरको दुःखदायी; शुभसे-पत्नी, श्वसुरकी सेवादार, मंगल से-पत्नी व्यभिचारिणी होती है।	क्रूरसे-रोगी, दरिद्र, दुष्टकार्य करनेवाला, अल्पायुषी	पितासे अलग रहनेवाला, उनसे सुखेच्छा न रखनेवाला पिताके धर्ममें धार्मिक, विद्यावान होता है।
तनयेश	भाग्यवान, देव-गुरु भक्ति-कारक, पुत्रवान, मिष्ट-भाषी, अच्छे स्वभावकी स्त्री	कटु वचनी, स्त्री रहित, वक्रभाषी, भाई और पुत्रवाला होता है।	सुज्ञानी, विद्यावान, कवि, गायक, राजाका पूज्य, रूपवान, नाट्यरसज्ञ
षष्ठमेश	क्रूरसे-विरोधी, क्रोधी, संतापकारी स्त्री होती है। शुभसे-बाँझ स्त्री होती है।	सग्रहणी रोगी, मगल-सापसे, बुध-विषसे, चद्र-जलसे, सूर्य-सिंहसे मृत्यु, गुरु-दुष्ट बुद्धि, शुक्र-नेत्रदोष	क्रूरसे-अपाहिज, भाईका विरोधी, शास्त्र न माननेवाला, भिखारी
जायेश	आयुष्यवान, प्रेमल, निर्मल स्वभाव, तेजस्वी	वेश्याप्रेमी, अविवाहित, दुःखी चिंतायुक्त होता है।	तेजस्वी, अच्छी प्रकृति, अच्छी स्त्री, क्रूरसे नंपुसक; लग्नेशकी दृष्टिसे नीतिवान
अष्टमेश	क्रूरसे-पेटका रोगी, दुष्ट स्वभाव दुष्ट स्त्रीका द्वेष, स्त्रीके दोषसे मृत्यु प्राप्त होती है।	उद्यमी, उपद्रवरहित, नीरोगी, धूर्त-कला प्रवीण, धूर्तोंमें प्रसिद्ध	हिंसक कठोर, वक्रमुखी, पापी, भाई रहित, देव-गुरु न माने
भाग्येश	सुंदर, रूपवान, सुलक्षणी, धनवान, धार्मिक सुकृत करनेवाली और पतिव्रता स्त्री होती है।	दुष्ट, हिंसक, बेघर, अधर्मी, भाई रहित होता है। क्रूर ग्रहसे नंपुसक होता है।	भ्रातृप्रेमी, श्रेष्ठ, दानवीर, देव-गुरु-सगे-स्त्री आदिमें आसक्त
कर्मेश	पुत्रवती, रूपवती, पतिव्रता भक्ति,-प्रीतिवान पत्नी	क्रूर, शुरवीर, दुष्ट माँ को दुःखदायी, अल्पजीवी, धूर्त, मृषावादी	श्रेष्ठ स्वभाव, अच्छे मित्र-भाई, माता-धार्मिक, सत्यवादी और अच्छे स्वभाववाली होती है।
लाभेश	तेजस्वी, अच्छा स्वभाववाला, संपत्तिवान, आयुष्यवान, एक पत्नीव्रती होता है।	क्रूरसे-अल्पायुषी, लंबी बिमारी, शुभसे-जीवितभी मृत संदृश, दुःखी होता है।	बहुश्रुत, शास्त्रज्ञ, धर्म प्रसिद्ध, देव-गुरु भक्त; क्रूरसे भाई, व्रत रहित होता है।
व्ययेश	क्रूरसे-दुष्ट, दुष्चरित्री चतुर, स्वस्त्रीसे मृत्यु शुभसे-वेश्या से मृत्यु होती है।	आठ जनोंका पालक कार्य-साधन न करे, द्रोही शुभ ग्रहसे धन सग्रही होता है।	तीर्थयात्रामे चचल स्वभाव क्रूरसे-पापी निरर्थक धन व्यय करे।
	दसम भाव	एकादश भाव	द्वादश भाव
लग्नेश	राजा से लाभ अच्छा स्वभाव विद्वान-गुरुजन माता का पूजक राजाके पास प्रसिद्धि	सुखी, पुत्रवान प्रसिद्ध तेजस्वी बलवान वाहनवाला होता है।	कठोर काम करनेवाला दुष्ट नीच परदेशगामी अभिमानी

धनेश	राजा को मान्य, उससे धन प्राप्ति, शुभसे- माता पिताका पालक होता है ।	व्यवहार से धनवान, लोक सेवा से प्रसिद्ध	क्रूरसे-कठोर, कृपण, निर्धन; शुभसे-लाभालाभ से प्रसिद्ध होता है।
पराक्रमेश	राजा से मान, माता-पिता भाईकी आज्ञा पालक, सर्व भाईयोंमें श्रेष्ठ	राज्यसे शोभा प्राप्त, भाई संबंधीकी सेवा करें, भोग प्रिय होता है।	मित्रोंसे विरोध, भाई को दुःखदायी, भाई से दूर- विदेशमें बसनेवाला होता है।
सुखेश	क्रूरसे-माताको त्याग पिता दूसरी शादी करे, शुभसे-माता का त्याग किये बिना पिता अन्य स्त्री सेवी बने	धर्मवान, पितृपालक, सत्कार्यकारी, आयुष्यवान, नीरोगी, पितृसेवी होता है।	पिता की मृत्यु या परदेशगमन क्रूरसे-पुत्र- माता के व्यभिचारसे मरता है।
तनयेश	राजसेवक, राजाका प्रिय, सुकृत प्रेमी, माताको सुखदायी	पुत्रवान, सत्संगी, गायनप्रेमी, राज्य सम्मानका सुख भोगी।	क्रूरसे-पुत्रविहिन; शुभसे- श्रेष्ठ पुत्रवान, पुत्रसे संतप्त, विदेश भ्रमणकारी
षष्ठमेश	क्रूरसे-माताका शत्रु, दुष्ट, पुत्रपालक, माँका छिद्रान्वेषी, धार्मिक वृत्ति	क्रूरसे-शत्रु से मृत्यु, शत्रु और चोर से दुःखी, पशुसे लाभ प्राप्त करता है।	जानवरसे हानि, प्रवासमें धन खर्च करें, देव-गुरु पूजक होता है।
जायेश	गुन्हगार, लंपट, क्रूरसे- दुःखी पीड़ित, श्वसुरवश	रूपवान, प्रीतिवाली, प्रसन्न, अच्छे स्वभाववाली पत्नी होती है।	घर और भाई विहिन, दुष्ट संग भागेडु स्त्रीके कारण पत्नीविहिन
अष्टमेश	राजाका चाकर, आलसी, दुष्टकार्य, करनेवाला, क्रूर से माता की मृत्यु	बचपन दुःखी, बूढ़ापा, सुखी क्रूरसे-अल्पायुषी और शुभसे-आयुष्यवान	दुष्टवाणी, लुच्चाई, निर्दय, चोर, स्वेच्छाचारी, वक्र, शरीरी होता है।
भाग्येश	राजाके कार्य करें, शूरवीर, माता-पिता पूजक, प्रसिद्ध, अच्छा स्वभाववाला होता है।	आयुष्यवान, धर्मवान, धनवान, प्रेमल, धर्मसे प्रसिद्ध, श्रेष्ठ पुत्रवान, राजासे लाभ होता है ।	विदेशमें मान, रूपवान, विद्यावान, क्रूरसे-धूर्त होता है।
कर्मेश	माता और माता के कुलको सुखी करनेवाला, चतुर	माननीय, धनवान, आयुष्यवान, सुखी, माता से रक्षित, माताको सुखदायी होता है ।	मातासे त्यक्त, बलवान, सुकृत कर्ता, राजकार्यमें प्रे॰ क्रूरसे-विदेशमें प्रीति-
लाभेश	मातृसेवी, मातृपालक, धनवान, धर्मी पिताका वैरी, और आयुष्यवान होता है।	आयुष्यवान, रूपवान, मनकी बात जाने, सुकृत कर्ता, अच्छा स्वभाव, प्रसिद्ध होता है।	आप-कमाई भोगी, स्थिर, रोगी, कलेश प्रिय, अभिमानी, दानवीर, सुखी होता है।
व्ययेश	परस्त्रीसे असग पवित्र दे॰ पुत्रप्रेमी धन सग्रही माता कटुभाषी होती है।	आयुष्यवान धनपति दानवीर, जग प्रसिद्ध सत्यवादी अपने घरमे प्रधान होता है।	ऐश्वर्यवान, बुद्धिवान, पशुसग्रही गाँव बसानेवाला कृपण, डरपोक, छोटे गाँवका मालिक होता है।

ग्रहकी दशा :- दशा अर्थात् काल अथवा समय। व्यक्तिके जन्मसे मृत्यु प्रर्यत त्रिकालिक-

अतीत, अनागत, वर्तमानकाल,-का शुभाशुभ समय एवं तत्कालीन घटमान घटनाओंके संकेत-कथन, विविध ग्रहोंकी दशा पर आधारित होता है।

ये दशाये प्रमुख रूपसे तीन प्रकारकी मानी गई हैं-अष्टोत्तरी, बीसोत्तरी, योगीनी। महादशाओंके इतिहास पर दृष्टिपात करनेसे ज्ञात होता है कि, प्राचीन कालमे 'योगीनी महदशा' फलादेश कथन किया जाता था, जो केवल नक्षत्राधारित होता था। आर्द्रासे प्रारम्भ करके, (तीनों-पूर्वा, उत्तरा नक्षत्रोंको भिन्न नहीं-एक मानकर)कुल चौबीस नक्षत्रोंमे और छत्तीस वर्षमें आठ दशाओंको विभाजित की जाती थी।

कालक्रमसे आठ दशा, सत्ताईश नक्षत्र और आठ ग्रहोंकी गिनती करके कुल एक सौ आठ वर्षोमें इनको विभाजीत किया जाने लगा।

इन आठ ग्रहोंका निश्चित क्रम और प्राभाविक समय *सूर्य-६ वर्ष*, *चंद्र-१५ वर्ष*, *मंगल-८ वर्ष*, *बुध-१७ वर्ष*, *शनि-१० वर्ष*, *गुरु १९ वर्ष*, *राहु-१२ वर्ष और शुक्र २१ वर्षका* निश्चित किया गया है। जिसे 'अष्टोत्तरी महदशान्तर्गत' माना जाता है। 'बीसोत्तरी महादशा'के कुल एक-सौ बीस साल होते हैं। नव ग्रहोंके प्राभाविक समयके मध्य इन एकसौबीस वर्षोको विभक्त किया जाता है। इन नव ग्रहोंका निश्चित क्रम और प्राभाविक समय *केतु-७*, *शुक्र-२०*, *सूर्य-६*, *चंद्र-१०*, *मंगल-७*, *राहु-१८*, *गुरु-१६*, *शनि-१९ और बुध-१७ वर्षका* निश्चित किया गया है।[१३]

वर्तमानमें योगीनी महादशाधारित फलादेश कथन नहिंवत् अर्थात् बहुत ही कम-क्वचित् ही किया जाता है।

जातकके आयुष्यके जिस वर्षमें जिस ग्रहकी दशा चल रही होती है, उस समयमें वह ग्रह उस व्यक्तिके जीवन प्रसंगोको प्रभावित करता है याने शुभाशुभ फल-प्रदान करता है। जैसे पचीस वर्षकी आयुके समय सूर्यकी महादशा प्रारंभ होती है, तब उस व्यक्तिके पचीससे इकत्तीस वर्ष तकके आयु समयमे उसका जीवन सूर्यसे और उससे संबंधित ग्रहों द्वारा प्राप्त शुभाशुभ फलसे प्रभावित होता रहता है।

सूक्ष्मसे सूक्ष्म, निश्चित फलादेश-कथन इन दशाओंके अवान्तर भेद-महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, प्राणदशा, सूक्ष्मदशादिके गाणितिक एवं तार्किक परिणामों पर आधारित होता है।

गोचर :- विभिन्न राशियोंमेसे भिन्न भिन्न ग्रहोंके दैनिक भ्रमणको 'गोचर' नामसे पहचाना जाता है, जिससे वर्तमानकी शुभाशुभ घटनाओका कथन किया जाता है।

अब ज्योतिष शास्त्रके मुख्य महयोगी 'पचाग' का परिचय दिया जाना है।

पचाग - पंचाग अर्थात् पॉच अगोका समूह-यथा-*तिथि, वार (दिन) नक्षत्र योग, करण।* इन पॉचो अगोका आधार सूर्य और चद्रकी गति और स्थिति पर होता है।

तिथि - सूर्य और चद्रक मध्य अतर दर्शित करानेवाली संज्ञा। सूर्य-चद्रके गति भेदके कारण प्रत्येक तिथिको पूर्ण होनेमे कमसे कम बीस और ज्यादा से ज्यादा

सत्ताईस घंटेका समय लगता है। तिथि-एकमादि से अमावास्या तक तीस होती है।

वार (दिन)- एक सुबहके सूर्योदयसे दूसरे दिनके सूर्योदय तकके समयको 'वार' (दिन) कहते हैं। उसका समय चौबीस घंटे प्रायः होता है। हिन्दु एक सूर्योदयसे दूसरे सूर्योदयको, ईसाई मध्यरात्रिसे और मुस्लिम सूर्यास्तसे वारका प्रारम्भ मानते हैं। वार सात होते हैं। रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

नक्षत्र - क्रांतिवृत्तके आरंभ स्थानसे प्रत्येक १३ अंश, २० कला विभागको नक्षत्र कहा जाता है। क्रांतिवृत्तके ऐसे २७ विभाग होते हैं, तदनुसार नक्षत्र सत्ताईस होते हैं। एक नक्षत्रको पूर्ण करनेमें चंद्रको कमसे कम २१ घंटे और अधिकतम २७ घंटे और २७ नक्षत्रको पूर्ण करने के लिए २७ दिन-७ घंटेसे कुछ अधिक समय लगता है, और ऐसे बारह चक्र जब वह पूर्ण करता है तब एक चांद्र नक्षत्रवर्ष होता है जिसका कालमान ३२७ दिन, २० घटे, ३८ मिनट, १८.१२४८ सैंकंड होता है।

योग :- सूर्य-चंद्रके राशि, अंश, कला, विकलाको जोडने से जो राश्यादि आये उनका प्रत्येक १३ अंश, २० कलाके विभागको योग कहा जाता है। वे भी सत्ताईस है। इनका समय जधन्यसे बीस से उत्कृ. पचीस घंटेका होता है।

करण - करण अर्धतिथि है, क्योंकि एक दिनमें दो आते हैं। वे ग्यारह होते है। जिसमेंसे पाँच अशुभ और छ शुभ है । ये संक्रान्तिके शुभाशुभ फल कथनमें उपयोगी हैं।[१४]

साधारण भावविचार अर्थात् फलादेशके मूल्यवान सिद्धान्त :-[१५]

१. जिस भावमें बुध-गुरु-शुक्र विराजमान हों अथवा जो भाव बुधादि ग्रहसे दृष्ट हो और उस भाव (स्थान) में अन्य किसी पापग्रहका रहना या दृष्टि न हों तब उस भावसे संबंधित सभी फल अच्छे प्राप्त होते हैं। (जिस भावमे अपना स्वामी- अर्थात् भावस्थित राशिका-स्वामी-बिराजित हो, या उनकी दृष्टि हो तब उस भावका शुभ फल प्रदान करता है ।)

२. जिस भावमे शुभ ग्रहकी राशि हो और उस स्थानमे ही उसका स्वामी बिराजित हों वा उसकी दृष्टि हो तब उस भावमें दृष्टव्य प्रत्येक बाबतोंका अच्छा सुख देता है। यदि पापग्रहका बिराजना या दृष्टि हो तब उस भावका अच्छा फल नही मिलता है।

३. जिस भावमे नीच ग्रह वा शत्रुकी राशिका ग्रह बिराजित हो उस भावका सुख नही मिलता है। जबकि जिस भावमे मूलत्रिकोण, उच्च एव मित्रके गृहमे शुभ या अशुभ (पाप) कोई भी ग्रह हो तब वह उस भावका अच्छा ही फल-सुख-प्रदान करता है।

४ जिस भावका स्वामी ६-८-१२ वे स्थान पर हो तब उस भावका, और जिस भावमे ६-८-१२ वे स्थानका स्वामी बिराजित हों उस भावका अच्छा फल नहीं होता है, लेकिन

उस भाव पर शुभ ग्रहकी दृष्टि हों तब उसका अच्छा फल (सुख) मिलता हैं। (जिस भावका स्वामी अपने स्थानसे ६-८-१२ वे स्थान पर यदि पापग्रह होकर रहा है तब उस स्थानका अशुभ फल देता है, और, यदि शुभ ग्रह हो तब अच्छा या बुरा-कोई भी फल नहीं मिलता है।)

५. जिस भावका स्वामी लग्नसे केन्द्र त्रिकोण (९/५) में हों और वह शुभ ग्रहसे दृष्ट हों, उस स्थानका अथवा जिस भावका स्वामी उच्चका, मुल त्रिकोणका, स्वगृही या मित्रके गृहका, बलवान हों तब उस स्थानका अच्छा-शुभ फल प्रदान करता है।

६. जिस भावका स्वामी अपने स्थानसे ९-५-४-७-१० वें स्थानमें हो, उस भावका स्वामी, शुभ ग्रहोंके साथमें-पाप ग्रह एवं पापग्रहकी दृष्टिरहित बिराजमान हों उस स्थानका अच्छा फल मिलता है (ऐसे न होने पर उस भावका अच्छा फल देनेमें वह असमर्थ हैं) अथवा वह ग्रह, शुभ ग्रह और पापग्रह-दोनोंके साथ बिराजित हों अथवा शुभ या पापग्रहसे दृष्ट हो, तब उसका अच्छा फल कम हो जाता है।

७. जिस भावका स्वामी आठवें या अस्तका, नीचका या शत्रुकी राशिका हों और वह शुभ ग्रहसे दृष्ट न हों वा साथमें न हों तब उस भावका सुख नष्ट हो जाता है। (इसी तरह जिस भावमे ग्रह होता है उससे लग्नादि प्रत्येकका फल मिलता है।)

८. जिस भावका स्वामी ६-८-१२ वें स्थानमें हों या शत्रुकी राशिका, अस्तका, या निर्बल हों, तब उस स्थानका अच्छा फल नही मिलता है।

९. जो ग्रह ६-८-१२ वें स्थानमें हों या नवमांशमें नीच, शत्रु या पापग्रहकी राशिका हो, लेकिन वह नवमाशमें उच्चका मित्रके गृहका या शुभ ग्रहसे दृष्ट हों तब वह शुभ फल प्रदाता बनता है।

१०. जिस भावका स्वामी जिस राशिमें हो, उस राशिका स्वामी ६-८-१२ वें स्थानमें हों, तब उस भावका अशुभ फल प्राप्त होता है / लेकिन उस राशिका स्वामी उच्चका, मित्र या स्वगृही हों तब उस भावका शुभ फल प्राप्त होता है।

११. जिस भावमें २-३-११ वे भावके स्वामीकी राशि हों, उस भावका अच्छा फल प्राप्त होता है। जिस भावका स्वामी मित्रकी वा उच्च राशिमें बिराजमान हो और उस राशिका स्वामी अस्तका, शत्रु वा नीच राशिका न हो तब उस स्थानका अच्छा फल प्राप्त होता है। (भाव संबंधी शुभ फल अर्थात् उस स्थानसे प्राप्त अशुभ फलका नाश और शुभ फल-वृद्धि; अशुभ फल अर्थात् उस स्थानसे प्राप्त अशुभ फलकी वृद्धि और शुभ फलकी हानि वा नाश। उदा:षष्ठम भावका शुभ फल अर्थात् रोग, शत्रु आदिका नाश: श्वसुर एव मातुल पक्षसे लाभ और षष्ठम भावका अशुभफल अर्थात् शत्रु-रोगादिमें वृद्धि, श्वसुर पक्षसे दु:ख, मातुलादिमें हानि)

श्रीमद् आत्मानदजी महाराजजीकी जन्म कुडली और जीवन घटनाओका मूल्याकन

श्री आत्मानदजी महाराजजीका जन्म चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सवत १८९४-तदनुसार

ई.स. १८३६ में हुआ था। आपका जन्म समय निश्चित रूपसे ज्ञात न होनेके कारण, प्राप्त जन्मकुंडली पर आधारित अंदाजित समय प्रायः प्रातःकाल ४ से ६ बजे तकका मान सकते हैं। *'श्री आत्मानंदजी जन्म शताब्दि स्मारक ग्रंथ' श्रीमद्विजय वल्लभ सुरीश्वरजी म. सा. द्वारा लिखित* *लेखाधारित-प्राप्त जन्म कुंडली*[१६]—

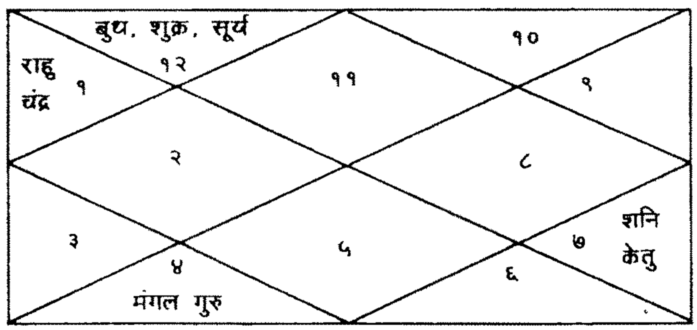

आपकी जन्मकुंडलीका विहंगावलोकन :-

आपकी जन्मकुंडलीका निरीक्षण करते हुए ज्योतिषशास्त्रके सिद्धान्तानुसार विश्लेषण करनेसे आपका बाह्याभ्यन्तर व्यक्तित्व, जीवन प्रसंग, गुण-दोषादिका विशिष्ट मूल्यांकन करके आपके प्रकटाप्रकट गुणावगुणका निरावरण किया जाता है।

आपकी जन्म कुंडलीके स्थान-राशि-ग्रहादि की परिस्थिति विशेष पर प्र[illegible] दृष्टिपात करनेसे निम्नांकित चित्र दृष्टिपथ पर उभर आता है।

इस जन्मकुंडलीमें *कुंभलग्न* है। चारों-केन्द्र स्थानमें कोई भी ग्रह बिराजमान नही है। नवम स्थानको छोड़कर त्रिकोणके स्थान भी बिना ग्रहोंका-रिक्त है। अतएव प्रथम नजरमें निर्बल दिखाई देनेवाली यह कुंडली अत्यन्त बलवत्तर है; क्योंकि- प्रथम स्थानका अधिपति-लग्नेश (शनि) उच्चका (तुलाका) बनकर भाग्य स्थानमें रहा है।

द्वितीय स्थानमें जल तत्त्ववाली मीन राशिमें सूर्य, प्रबल योगकारक उच्चका शुक्र और नीच भंग बुध-युति सम्बन्धसे स्थित हैं एवं उच्चके स्वगृह दृष्टा गुरुकी नवम-पूर्ण दृष्टिसे दृष्ट है। तीनोंके युति सम्बन्धसे संन्यास योग बनता है।

तृतीय स्थानमें मेष राशिमें बलवान राहु और चंद्र यति संबंधसे बिराजित हैं। तृतीयेश-कर्कका मंगल नीचका होने पर भी उपचय स्थानमें उच्चके गुरुके साथ युति संबधसे 'नीचभंग' राजयोग प्राप्त करता है। तृतीयेश मंगल और षष्ठेश चद्रका परिवर्तन योग होता है। तृतीय स्थान स्थित चंद्र और बलवान राहु उच्चके शनिके साथ प्रतियुति दृष्टि सबंध रखते हैं।

चतुर्थ (केन्द्र) स्थानमे एक भी ग्रह नही है। शुभ एवं स्थिर राशि वृषभ, जिसका स्वामी, स्वगृह दृष्टा गुरुसे दृष्ट प्रबल योगकारक उच्चका शुक्र है।

पचम (त्रिकोण) स्थानमे भी एक भी ग्रह नही है। मिथुन राशि है जिसका स्वामी

'नीच भंग' प्राप्त-बलवान सूर्यसे युति संबंधसे युक्त-उच्चके गुरुसे दृष्ट और गुरु से नव-पंचम योग करनेवाला बुध है।

<u>षष्ठम् स्थानमें</u> कर्क राशिमें गुरु उच्चका और मंगल नीचका स्थित है। लेकिन उच्चके गुरुसे युति संबंधके कारण नीचभंग-राजयोग होता है। नीचभंग मंगल पर पूर्ण बलवान लग्नेश (शनि) की भाग्य स्थानसे दसम-पूर्ण-दृष्टि चंद्र-मंगलका परिवर्तन योग बलवान उपचय योग होता है।

<u>सप्तम (केंद्र) स्थानमें</u> कोई भी ग्रह नहीं है; सिंह राशि स्थित है सप्तमेश सूर्य शुक्र-बुधसे युति संबंधसे और उच्चके गुरुसे दृष्ट है।

<u>अष्टम स्थानमें</u> कन्या राशि स्थित है। अष्टमेश बुधकी उपरोक्त परिस्थितिके अतिरिक्त स्वगृह दृष्टा है। सूर्य-शुक्रकी भी सातवीं पूर्ण दृष्टि है। इस स्थानमें ग्रह एक भी नहीं है

<u>नवम-भाग्य (त्रिकोण) स्थानमें</u> बिराजित केतु लग्नाधिप शनिसे युति संबंध से युक्त है शनि-चंद्रकी प्रतियुति है। शनि तृतीय पूर्ण दृष्टिसे लाभ स्थानको देखता है।

<u>दसम-कर्म (केंद्र) स्थानमें</u> ग्रह नहीं है। नीचभंग प्राप्त कर्मेश त्रिकोण स्थानके शनि और केतुको चतुर्थ-पूर्णदृष्टिसे देखता है।

<u>एकादश (लाभ) स्थानमें</u> कोई ग्रह नही है। धनराशि स्थित है जिसका स्वामी गुरु है' उच्चका शनि तृतीय पूर्ण दृष्टिसे लाभ स्थानको देखता है।

<u>द्वादश स्थानमें</u> कोई ग्रह नहीं है। मकर राशि स्थित है जिसका स्वामी-शनि-लाभ स्थानको देखता है. तो मंगल और गुरुकी भी पूर्ण दृष्टि है।

प्रथम भावसे प्राप्त फलस्वरूप बाह्याभ्यंतर व्यक्तित्व-चारित्र-आरोग्य-स्वभावादिका विश्लेषण:-

A. कुंभलग्न-होनेसे-लग्नेश (शनि) और स्थिर एवं वायु तत्त्वकी राशिका लग्न होनेसे-पूज्य गुरुदेव श्री आत्मानंदजी महाराज अत्यन्त विचारशील फिरभी दृढ मनोबली थे। जैसे -

"स्थानकवासी पंथ सत्यसे दूर है - इसका एहसास होने पर भी उस पर पाँच-सात वर्ष तक बार-बार चिंतन-मनन-अध्ययनादि करते रहे अंतमें श्री रत्नचंद्रजी महाराजजीसे भी अच्छी [illegible] परामर्श कर लेनेके पश्चात् इस निर्णयको स्वीकार किया। इतना ही नहीं जीवनकी अंतिम साँस तक, अनेकविध कष्ट-कठिनाइयोंके आँधी-तूफानके बीचमें स्वीकृत निर्णयका यथाशक्ति परिपालन किया-प्रचारित किया-प्रसारित किया। सर्वस्व समर्पित कर दि[illegible]।"

B [illegible]लग्नेश शनि उच्चका (तुला राशिका) बलवान बनकर धर्मभुवन (भाग्यस्थान) में बिराजित होनेसे पूज्य गुरुदेवको सुवर्णकी भाँति अग्नि परिक्षामें कसकर आत्मिक-शुद्धि प्रदान करते है [illegible] सुवर्णके स्थान प्रदान करता है फलस्वरूप पूज्य गुरुदेव [illegible] चुंबकीय अध्यात्म शक्तिके स्वामी अभूतपूर्व आत्म[illegible] उत्कृष्ट [illegible] प्रखर वैराग्यवान [illegible] उनके अत्यधिक अनुरागी सत्त्वगुणी कुशाग्र बुद्धि तत्त्ववेत्ता

पूर्णन्यायी, सत्यान्वेषक, सत्य प्ररूपक, सत्य स्वीकार कर तदनुसार आचरण करनेवाले, सहनशील, उदारदिल, परोपकारी, शान्त प्रकृति, कुनेहबाज, चतुर, साधन-संपत्तिका उत्तमोत्तम उपयोगकारी, कार्यदक्ष, शीघ्रनिर्णायक तार्किक शिरोमणि, दीर्घदृष्टा, आकर्षक-सौजन्यशाली-कुशाग्र व्यक्तित्ववाले, अनुशासन प्रिय आदि अनेकानेक गुण के मूर्तिमंत-जीवंत स्वरूप प्राप्त कर सके जैसे-

बचपन मे ही उदारता गुण प्रबल होनेसे खुदके खेलनेके लिए बनायें-हस्त चित्रित-ताशके पत्तोंको क्षण का भी विलंब किए बिना अंग्रेज अफसरकी माग पर दे दिया। बचपन से ही परोपकारादि गुण भी दृष्टि गोचर होते हैं-नदीके उल्टे प्रवाहमें तैरकरके, जानकी बाज़ी लगाकर भी डूबती स्त्रीको उसके बच्चे के साथ बचा लिया था। जीवनमे कदम-कदम पर वैसे ही परोपकारके अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं। सत्यके कारण उपाधियोंकी आँधी आने पर भी-मरणांत कष्ट सहन करते हुए संघर्षमय जीवन व्यतीत किया। दीर्घदृष्टा बनकर भावी पिढीके सुधारके लिए, कुरूढियोंके विरुद्ध जेहाद जगाकर सबको जागृत किया। संघको शिक्षा और धार्मिक मोड देनेके लिए आजीवन-अथक प्रयत्न करते रहे। इत्यादि अनेक गुण उनके जीवनमें शृंगार बनकर शोभायमान हुए हैं।[१८]

C. लग्नस्थान पर,-- जिसका 'नीचभंग' हुआ है और जो 'उपचय' स्थानमे उच्चके गुरुके साथ युति संबंधसे बिराजित है ऐसे,--मंगलकी आठवी-पूर्णदृष्टि होनेसे और वही मंगल ग्रहकी चौथी दृष्टि लग्नेश पर होनेसे पूज्य गुरुदेव अत्यंत साहसिक, नीडर, बलवान, प्रामाणिक, सत्यके आग्रही, स्पष्ट वक्ता, कर्मठ, उद्यमी, हृष्ट-पुष्ट-सौष्ठवयुक्त-दमामदार व्यक्तित्व के स्वामी, रक्तवर्ण शरीर सम्पन्न थे। जैसे-<u>साहसिक ऐसे</u> कि पाँच सात वर्षकी आयुमें पिताके अनुकरण रूप, आधीरातमें अकेला छोटा दित्ता डाकुओसे गृहकी रक्षाके लिए नंगी तलवार लेकर द्वार पर खड़ा हो गया था। ऐसे ही साहस और पराक्रम आपके जीवनके हर मोड़ पर-पगपग पर प्राप्त होते है। <u>बलवान ऐसे</u>, कि, भावनगरमें गधेको बचानेके लिए, जो लकडीका बड़ा भारी लठ्ठा दो-चार मुनिराजोंके संयुक्त प्रयत्नसे हील भी न सका था, उसे अकेलेने एक झटके के साथ दूर हटा दिया। <u>उद्यमशीलताके</u> कार हो तो अल्प समयमें ही बहुमुखी प्रतिभाको कार्यान्वित करके अध्ययन और अध्यापन प्रवचन व लेखन, प्रतिष्ठायें-अंजनशलाकायें, समाजोत्थानमें मार्गदर्शन और स्व-परके निरतिचार चारित्रपालन आदिको एक ग्रन्थ न्याय देनेमें सफल रहे ।[१९]

D इसके अतिरिक्त प्रथम स्थान फल स्वरूप बाह्य व्यक्तित्व आरोग्य, स्वभावादि पर असरकर्ता गुरु ग्रहकी नवम दृष्टि, सूर्य-बुध-शुक्र पर होनेसे उससे प्रभावित क्या फल प्राप्ति होती है यह दृष्टव्य है-शनि और बुध-दोनोके प्रभावसे लम्बी, एवं मंगलकी दृष्टिसे हृष्ट-पुष्ट कायावान सूर्यके कारण अत्यत तेजस्वी, प्रतिभा सपन्न आकर्षक मुखकमलवाले स्वमानी विरोध-आक्रोशपूर्ण लेकिन तर्कबद्ध एव दृढतासे करनेके स्वभाववाले रोग प्रतिकारक शक्तिके कारण सपूर्ण स्वस्थ एव नीरोगी काया फिरभी कभी कफ और पित्त प्रकृतिके प्रकोपसे पीडि.. उच्च योगकारक शुक्रके कारण सुदर प्रभावशाली नेत्र-धारी

शरीरमें नाड़ियाँ अधिक और अनवरत रक्ताभिसरण होनेसे अत्यन्त शक्तिशाली, वीर्यवान, शौर्यवान थे-तो कला रसिकता अर्थात् नैसर्गिक रूपसे ही चित्र-संगीतादि कलाओमें अभिरुचि युक्त प्राविण्यके मालिक थे. 'नीचभंग' योग प्राप्त बुधके कारण वाक्पटुता, बुद्धिचातुर्य, कार्यदक्षता भी आपको प्राप्त थी। जैसे- खेलनेके लिए ताशके पत्ते एक बार देख लेने पर हूबहू स्व-हस्त चित्रित बना लिए, तो खेल खेलमें जोधाशाहजीके मकानको चित्रित कर उसमें जोधाशाहजीकी तसवीरको उभारने वाले देवीदासने चित्रकारिता किसीसे सिखी नही थी। बिना अभ्यासके ही उनके स्वर-लय-ध्वन्यादि परका आधिपत्य बड़े बड़े उस्ताद-संगीतज्ञोंने भी महती प्रशंसा के साथ स्वीकार किया था। उनके प्रवचन भी मेघ-ध्वनिमें गंभीर-एक सुर-लय प्रवाहमें बहते थे।

पूज्य अमरसिंहजीके मेजरनामा पर हस्ताक्षर करानेके लिए आये हुए पन्नालालादिको ठंडे आक्रोशपूर्ण एक ही वाक्यमें शांत कर दिया। वाक्पटुताके कारण ही उनके साथ जो वाद या विवादके लिए उपस्थित होते थे जो जीतनेके लिए आते थे वे हारकर जाते थे।[30]

द्वितीय स्थानसे किया जानेवाला वाणी-धन-परिवारादि संबंधित फलादेश :-

धन भावमें सूर्य, नीचभंग प्राप्त बुध और प्रबल योगकारक उच्चका शुक्र बिराजमान हैं। ये तीनो ग्रह एवं द्वितीय स्थानमें स्वगृह अर्थात् मीनराशि उच्चके गुरुकी (नवम)-पूर्ण दृष्टिसे दृष्ट हैं। अतएव जातकको कलाप्रिय एवं कलाभिज्ञ बनाती हैं। साथमें धन-वाणी-परिवारका पारावार सुख मिलता है। वाणीमें मानो साक्षात् सरस्वतीका वास भासन होता है। मीन राशि, जल तत्त्वकी होनेके कारण अंतःकरणको धक्का लगानेवाली पारिवारिक जनोंकी—समस्याओके कारण उनसे मनःदुःख होता हैं, लेकिन स्वगृह दृष्टा गुरु आत्मविश्वाससे झंकृत, गंभीर-मधुर वाणीसे समाधान देकर परिस्थितिका सुधार कर लेता है। बुध पर गुरुकी दृष्टि एवं नव-पंचम योग, जातकको व्यावहारिक, तुलनात्मक, निर्णय शक्ति और न्याय-प्रियता, प्रभाविकता, दृढ़ता, ओजस्विता, गहनता, धैर्य, ज्ञानयुक्त-गरिमामयी साहित्यिकता और कवित्व शक्ति बक्षती है; तो बुधकी प्रबल योगकारक उच्चके शुक्रसे युतिके कारण वाणींमें रसिकता, और शत्रुको वश करनेवाली चूंबकीय-मोहक प्रभावकता आती है। अतएव उनको जीतनेके लिए आनेवाला स्वयंजीता जाता है। प्रबल योगकारक उच्चका शुक्र धन भावमें शुभफल प्रदाता होनेसे धार्मिक, सामाजिक या साधर्मिकादि के कार्य हेतु अथवा अन्य आवश्यकता हेतु धनप्राप्ति अत्यन्त सरलतासे हो जाती है-जैसे-

(१) संवत १९४० में गणिवर्य श्री मूलचंदजी महाराज (आपके बड़े गुरु भाई) के साथ (आपके शिष्य) मुनिश्री हर्षविजयजीकी छेदोपस्थापनीय-बड़ी दीक्षाके कारण थोड़ा-सा मन मुटाव हुआथा, लेकिन संवत १९४५ में आपने अहमदाबादमें गणिवर्यश्री को आमंत्रित करके अनन्य स्वागत एवं क्षमा प्रार्थनाके साथ अन्य शिष्योंके योगोद्वहनको किया और बड़ी दीक्षादि उनसे ही करवाकर परिस्थितिको सुधार लिया।[31]

(२) आपकी ज्ञान-गरिमा युक्त गंभीर ओजस्वी वक्तृत्वकीय चमत्कारके प्रभावसे प्रभावित-प्राप्त वाणी भावनगरके ... लिम्बड़ी नरेश, बिकानेर नरेश, जोधपुरके नवाब और उनके भाई और अनेक राजा-महाराजा

रामदित्तामलजी आदि क्षत्रिय, कृष्णचंद्रादि ब्राह्मण, लाला गोंदामलजी, पंडित श्रद्धारामजी, पंडित लेखारामजी, आर्यसमाजी लाला मुन्शीरामजी, लाला देवराजजी आदि, मुन्शी अब्दुल रहमानादि मुस्लिम-आदि अनेक जैन-जैनेतरोंको आकर्षित कर गई थी और आपके पक्के भक्त के रूपमें आजीवन आपकी सेवा-आज्ञा शिरोधार्य करते रहे थे। अनेक स्थानवासी साधु-श्रावकादि आपको जीतनेके लिए आये लेकिन आपसे जीते गए और आपके विचारोंसे सहमत हुए।[23]

(३) आपकी शुभ प्रेरणा से ही गुजरातमें अनेक जिनबिम्ब एवं श्री मंदिरादिक निर्माण हेतु धन प्राप्ति पंजाब के लिए -बिनबादल बरसात की भाँति-हुई थी।

(४) प्रबल योगकारक उच्चके शुक्र पर गुरुकी शुभ दृष्टिके कारण- 'विश्व धर्म परिषद'-चिकागो-की ओरसे आमंत्रित होने पर भी मुनि जीवनकी मर्यादाके कारण वहाँ जानेमें असमर्थ लेकिन श्री वीरचंदजी गांधी द्वारा अक्षर देह से (चिकागो प्रश्नोत्तर-ग्रंथ द्वारा) वहाँ पहुँच कर विश्व विख्यात हुए।[23]

तृतीय स्थानसे भ्रातृ सुख-पराक्रम-साहस-प्रवासादिका निर्देशन दृष्टव्य है-

तृतीय स्थानमे मेष राशिमे राहु और चंद्र युति सबंधसे बिराजित है। तृतीयेश-मंगल, षष्ठम्-उपचय स्थानमे उच्चके गुरुके साथ युति सबंधसे नीचका होने पर भी 'नीचभंग' योग प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त तृतीयेश मंगल और षष्ठेश-चंद्रका परिवर्तन-योग भी शुभ फलदाता है। नवम स्थानमे शनिसे प्रतियुति संबंध भी महत्त्वपूर्ण फल प्रदान करता है। तृतीय उपचय स्थान स्थित बलवान राहुके कारण पूज्य गुरुदेव साहसिकता अनुपमेय पराक्रम और जमी शूरवीरता, निर्भीकता, सतत प्रवृत्तिशीलता ओजस्विता, अन्यको वश करनेवाली प्रभावकता, त्वरित निर्णयशक्ति, गूढविद्या प्रति प्रेम, स्वतंत्र-मौलिक विचार और चिन्तन शक्ति प्राप्त करते है। राहु और चंद्रकी युतिके कारण अद्भुत कल्पना-शक्ति और एवॉर्ड प्राप्त विजयशीलता के स्वामी बनते है।[24]

मेष राशिमे राहु स्थित होनेसे वक्तृत्व कलाकी अनोखी अदा प्राप्त होती है और आप शत्रुजयी बनते हैं। धार्मिक क्षेत्रमे ईच्छित कार्य संपन्नतामे सहधर्मी-उत्तम साधुओका सहयोग प्राप्त होता है। नवम स्थानमे शनिसे प्रतियुतिके कारण आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर बिराजमान होते हैं। अपरिमित आत्मिक-आनंददायी आराधना कर सकते हैं।

अशुभ स्थानका स्वामी षष्ठेश चंद्र तृतीय स्थानमे बिराजमान होनेके कारण तृतीय स्थानका सुख नष्ट करे लेकिन बलवान राहु केवल भ्रातृसुखके अतिरिक्त सर्व सुखोकी रक्षा करता है-नष्ट नही होने देता इसलिए उपरोक्त सर्वगुण हमे श्री विजयानंदजी म. सा. के जीवनोद्यानमे सुवासित पुष्पकी भाँति आकर्षक लगते हैं।

शनि और राहु की प्रतियुति संघर्षमय जीवनमें भी एक अनूठी कीर्ति [illegible] स्थापित करनेके लिए सौभाग्यशाली बनाती है। [illegible] राजस्थान के रेगिस्तान और मालवाके विहार समय आदिवासी [illegible] [illegible] [illegible] मालिकी तलवार [illegible] कलाई पकड़कर ऐसी स्थितिमें [illegible] [illegible] साहसिकता [illegible] पराक्रमका परिचय [illegible] बिना किसी प्रकारकी शिक्षा

कियें ग्रांड टंनमें हमें उनकी उदारता आश्चर्यचकित करती है। आपकी ओजस्विता, प्रभावकता, अद्भुत कल्पना शक्ति आदि का परिचय विविध व्यक्ति और सभाओंमें हुए वाद या व्याख्यानादि में दृष्टि गोचर होते हैं। स्थानकवासी सम्प्रदायमें से संवेगी मार्ग प्रति प्रस्थानके लिए सहयोगी-साथियोंकी प्राप्ति मेषराशिके राहुको ही आभारी है। जीवन पर्यंत आध्यात्मिक आराधनाकी मस्ती-निजानंदका स्वानुभव नवम स्थानमें शनिसे प्रतियुतिका प्रभाव है।

चतुर्थ (सुख) स्थानसे व्यक्तिके सर्वांगीण सुख और विशेष रूपसे मकान-माता-मित्रादि का सुख, उच्चपद प्राप्ति आदिके बलाबलका विचार किया जाता है।

शुभ और स्थिर-वृषभ राशियुक्त चतुर्थ स्थानमें कोईभी अशुभ ग्रह या अशुभ ग्रहकी पूर्ण दृष्टि नहीं है। इसके अतिरिक्त चतुर्थ स्थानका स्वामी, स्वगृह दृष्टा, उच्चके गुरु-ग्रहसे दृष्ट, उच्चका प्रबल योगकारक शुक्र है अतएव इस स्थानका उत्तमोत्तम-संपूर्ण शुभफल प्रदान करता है। यही कारण है कि आपके सभी साथी आपके प्रत्येक-कार्य,प्रत्येक आदेशपालनके लिए सदेव तत्पर रहते थे। आपकी माताका आपके प्रति अप्रतीम वात्सल्य था, तो माता समान सभी गुरुदेवोंके (स्थानकवासी एवं संवेगी साधु जीवनके) दिलमें आपके प्रति अत्यंत स्नेह-सभर कृपा दृष्टि थी।

(२) तपागच्छगगनांचलमें प्रायः दो सदियोंसे शून्य सूरिपदारूढ उदीयमान तेजस्वी नक्षत्र रूप चमकनेका सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ, जो जीवनकी सर्वोत्कृष्ट सिद्धि (सर्वोच्च पद प्राप्ति) का सूचक है। [३५]

पंचम स्थानसे बुद्धि, विद्याभ्यास, मंत्र-विद्या संतान सुख, लागणीशीलतादिका निर्देश होता है। (विद्या स्थान या तनय स्थान)-इस स्थानमें कोई भी ग्रह बिराजमान नहीं है। और न किसी ग्रहकी पूर्ण दृष्टि है। पचमेश बुध मीन राशिमें होनेसे नीचका बनता है, लेकिन बुध ग्रह तटस्थ (मिश्र) ग्रह होनेसे निम्नांकित तीन कारणोंसे शुभ बनकर शुभफल प्रदान करता है।

(१) प्रबल योगकारक उच्चके शुक्रसे युति संबंधके कारण 'नीचभंग' योग होता है।
(२) मित्र ग्रह गुरुके गृहमें स्थित-बलवान सूर्यके साथ युति संबंध रखता है। और
(३) उच्चके गुरुसे दृष्ट एवं नव-पंचम योग करता है जिससे शुभ बना बुध तीव्र-सूक्ष्म बुद्धि चातुर्यको प्रदान करता है। पंचम स्थानसे विद्याभ्यासका निर्देशन मिलता है। विद्याभ्यासके फलकथनके लिए ... और गुरुका समन्वय आवश्यक बन जाता है।

उपरोक्त तीन कारणोसे आप अनेक विद्याओके स्वामी थे-पारंगत थे। षटदर्शन न्याय ज्योतिष आगम, इतिहास, साहित्य काव्य मंत्र-विद्यादि विभिन्न विषयक विद्याके गहन-गंभीर अध्ययन सम्राट थे। तर्कबद्ध वाद शक्तिसे प्रतिवादीको जकडकर उसे उलझित करके हराकर चूप कर देते थे। गुरुसे नव-पंचम योगके कारण शांतिप्रिय विनयवान देव-गुरु भक्तिकारक और अत्यंत आस्थावान भी थे। हूबहू वर्णन शक्तिसे पत्र व्यवहारमे भी अद्वितीय थे इसे होनेंल जैसे विदेशी विद्वानको अपने ज्ञान प्रकाशसे पत्रों द्वारा ही प्रभावित किया था। मीन राशि स्थित अष्टमेश-बुध स्वगृहको प्रतियुति दृष्टिसे देखता है परिणामत जातक गूढ विद्याका ज्ञाता

होता है। पूज्य गुरुदेवको भी मेड़ताके एक वयोवृद्ध यतिजीने योग्य एवं समर्थ जानकर कुछ सिद्ध-मंत्र विद्यायें प्रदान की थी, जिसका आपने अपने जीवनमें शासन प्रभावना और समाज एवं संघ की हितरक्षा-उन्नति आदिके लिए उपयोग किया था। [२७]

षष्ठम स्थानसे रोग-बिमारी-शत्रु-साथी-मददनीशोंका सुख अंदाजित-निर्धार-किया जा सकता है- षष्ठम दुःस्थान स्थित कर्क राशिका मंगल नीचका बनता है, जिससे जातकमें अयोग्य गुरुकी अधीनता और आलस्य दृष्टिगोचर होता है, लेकिन ऐसे मंगल पर पूर्ण बलशाली-उच्चके शनि (लग्नेश) की पूर्णदृष्टि होनेसे; चंद्र-मंगलका (तृतीय-षष्ठम स्थानका) परिवर्तन योग होनेसे और बलवान उपचय योग होनेसे; उच्चके गुरुके साथ युति संबंधसे 'नीचभंग' राजयोग होनेसे दुःस्थान स्थित नीचका मंगल, अशुभ फल-प्रदान दोषसे मुक्ति पाकर यथोचित मार्ग पर आता है। शुभ फलदायी बनता है। "परिणामतः पूज्य गुरुदेव शिस्तबद्ध संयमी, नीडर, प्रामाणिक, कर्तव्यनिष्ठ विचक्षण बुद्धिवान् सिद्धान्तवादी शास्त्र पारंगत स्वमानी, स्पष्ट वक्ता और कार्यरत बनते हैं। आपको अपने कार्योंमें अचानक सफलता प्राप्त होती है।" [२८] स्थानकवासी गुरु जीवनरामजीकी अधीनतासे मुक्त बनकर संवेगी गुरु श्री बुद्धि विजयजी महाराजजीके पास दीक्षा ग्रहण कर आत्मकल्याणकारी पथ पर अग्रसर होते हैं और निरंतर कार्यदक्षता से कार्यक्षम बनते हैं। अन्य गुणोंकी सुवास भी उनके जीवनोद्यानको कदम कदम पर महका रही है। सत्य सिद्धान्तके पक्षपाती गुरुदेवने अपने प्रिय-परोपकारी गुरु जीवनरामजीका साथ भी छोड़ा, साथसाथमें सुख-शांति-आरामको भी त्यागकर उपाधियोंकी झंझावाती आंधीमें जीवनको समर्पित कर दिया।

षष्ठम स्थान स्थित कर्कका-उच्चका-गुरु बहुमुखी प्रतिभा प्रदान करता है। शत्रुओंको नष्ट करता है, मानसिक झुकाव धर्म और ज्ञानकी ओर होता है। शरीर रोग रहित बनाता है। यही कारण है कि प्रायः आपका स्वास्थ्य एकाध प्रसंगको छोड़कर जीवन पर्यंत ठीक ही रहा। आपके जीवन-दर्शनसे ज्ञात होता है कि अनेक बार जीवनमें कई प्रतिस्पर्धी और प्रतिवादी, वैरी और विरोधी आये लेकिन आप सर्वत्र-सर्वदा शत्रुजयताका सौभाग्य प्राप्त करते रहे। वैरी भी वश हुए, शत्रु भी साथी बने और प्रतिस्पर्धी एवं प्रतिवादी शांत हो गए। इस षष्ठम स्थान स्थित कर्कका-उच्चका-गुरु-उच्चके शनि (लग्नेश)-जो बलवान बना है, उसकी भाग्य स्थानसे दसम-पूर्णदृष्टि-से दृष्ट है जिससे जिद्दी स्वभावकी निर्बलता दूर करके जातकको दृढ़ मनोबली और उत्कृष्ट अध्यात्मवादी बनाता है। मानो मानव से देव, नरसे नारायण बनना बायेंहाथका खेल हो। जातकको स्वधर्मका त्याग करवाता है जैसे आप ब्रह्म क्षत्रिय कुलोत्पन्न होने पर भी गुण ग्राहीता एवं सत्य स्वीकार करके गुणावलंबित जैन धर्मी बने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक अन्ततोगत्वा शुद्ध मार्गके पथिक बनकर आत्मोत्थानमें कार्यरत रहे। [२९] अनेक तीर्थ यात्राओंमें विशेष रूपसे सिद्धाचलकी यात्रामें आप परमात्ममय बनकर झूम उठे और फूट पड़े वह कोकिल स्वर "अवतो पार भये हम साधो" जिसमें आपके परमात्मदर्शनके भाव झलकते हैं।

सप्तम स्थानसे जातकके जाहेरजीवन दाम्पत्यजीवन, साथियोका सहयोग और आध्यात्मिकताके-

संन्यस्त जीवन प्राप्तिके योगादिका निर्देश मिलता है।
सप्तमेश सूर्य द्वितीय स्थानमे प्रबल योगकारक शुक्रके साथ और त्रिकोणाधिपति पंचमेश-बुधके साथ युति सम्बन्धसे स्थित है। और गुरुकी नवम-पूर्ण -दृष्टि से दृष्ट है, जिससे विश्वविख्यात प्रसिद्धि प्राप्त होती है। जैसे- पू. श्रीमद्विजयानंद सुरीश्वरजी महाराज 'विश्व धर्म परिषद' में आमंत्रित किये जाते है। आपसे शिक्षाप्राप्त श्री वीरचंदजी गांधी चिकागोमें आपके नामको चार चांद लगानेवाली प्रतिभामें विश्वके विद्वान सज्जनोंमें भी आपसे प्राप्त ज्ञान-ज्योतिको प्रकाशित एवं प्रसारित करके आपका सम्माननीय स्थान प्रस्थापित करके प्रसिद्धि दिलाते हैं।

इस स्थानमें एक भी ग्रह बिराजमान नही हैं, न तो किसी पापग्रहकी दृष्टि हैं। आध्यात्मिक राहके राहीको दाम्पत्य सुखका प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता है। उनके लिए तो संन्यस्तकारी योग-जो साधु जीवनकी स्वीकृति और स्व-पर कल्याणकारी संकेत देता है-महत्त्वपूर्ण हैं। आपकी कुंडलीमें भी शनि-चंद्रकी प्रतियुति; उच्चके तीन ग्रह, सूर्य-गुरुके-दृष्टि संबंध, भाग्येश (प्रबल योगकारक शुक्र) से शनिका मित्रसंबंध, भाग्य भुवनमें शनि केतुकी युति, उच्चका लग्नेश नवम (त्रिकोण) स्थानमें, 'अनफा'योग, बारहवें स्थान पर गुरुकी दृष्टि आदि ऐसे ही संन्यस्तकारी योग प्राप्त होते है (साथियोंके सहयोगका विवरण चतुर्थस्थानान्तर्गत विश्लेषणानुसार ज्ञातव्य)
अष्टम स्थान आयुष्य, गूढ़ विद्या प्राप्ति, लम्बी बिमारी आदिकी ओर संकेत करता है।
अष्टमेश बुध 'नीचभंग' योगसे और उच्चके प्रबल योगकारक शुक्रके साथ एवं सूर्यके साथ युति संबंधसे युक्त धर्मस्थानमें स्थित है, जिस पर उच्चके गुरुकी नवम-पूर्ण-दृष्टि है। इसके अतिरिक्त अष्टम स्थान पर सूर्य-बुध शुक्रकी पूर्ण दृष्टि है। स्वगृह दृष्टा बुधकी दृष्टिसे जातक आयुष्यवान और गूढ़ विद्याधारी होता है-जैसे- अंबाला शहरमें श्री सुपाश्वनाथजी के मंदीरजीकी प्रतिष्ठा प्रसंग पर गूढ विद्याशक्ति के ही प्रभावसे घनघोर बादलोंको बिखेर कर महोत्सवकी रौनक एवं श्री संघका उत्साह वर्धन किया।[10]

नवम-भाग्य-भुवन त्रिकोणमें अत्यधिक महत्त्वपूर्ण-बलवान माना जाता है। यह स्थान धर्म एवं भाग्य संबंधित फल प्रदाता माना गया है।
इस स्थानमें, उत्कृष्टताकी पराकाष्टा पर पहुँचानेवाला केतु, केन्द्राधिपति (लग्नेश)- तुलाके उच्चके शनिके साथ युति संबंध रखता है, फल स्वरूप भाग्य [illegible]नका उत्तमोत्तम फल प्रदान करता है। 'शनि-चंद्रका दृष्टि संबंध जातकको संयमी ब्रम्हचारी, दूरदर्शी, अनुशासन प्रिय, नीडर लोहपुरुष, कलाकार बनाता है।'[11] शनि की राहुसे प्रतियुति आध्यात्मिक उन्नतिमे बल देती है। जातकको गूढ वि[illegible]व साधुताके लिए आकर्षण होता है। प्रायः दो सदियोंसे तपागच्छगगनांगन सर्वोच्च पद-आचार्य पद धारी से विरहित था। भारतवर्षके समस्त श्री संघोंकी इस पदके लिए आपको ही यथायोग्य समझकर अत्यन्त सम्मान एवं आग्रहपूर्ण विनंति से इस उत्कृष्ट-महत्तम पद पर अलंकृत होनेका सौभाग्य पालीतानामें सकल संघ समक्ष, प्राप्त हुआ।[12] इसके अतिरिक्त नवम स्थान स्थित उच्चके शनिके कारण आप निरभिमानी मिलनसार मधुरभाषी परोपकारी दीर्घदृष्टा व्यवहारदक्ष

सहनशील, संयमशील, मेहनती, करकसर स्वभावयुक्त, दृढ़निश्चयी, स्पष्ट, गंभीर, विवेकी, मृदुभाषी निष्पक्षपाती-न्यायी, शास्त्रोंके गूढ़ अभ्यासके कारण उच्च अध्यात्म-ज्ञानी, विद्वानलेखक, प्रकाशक, गूढ़ तत्त्वज्ञान चिंतक-प्रचारक-प्रसारक, अनेक गुणोपेता वाणीके प्रभावसे उच्च स्थान प्राप्यकारी साधु बन सके थे। आपके लिए विदेश यात्राका भी योग था। [33] साधुजीवनकी मर्यादाओंके कारण आपने उस लोभको त्याग कर श्री वीरचंदजी गांधीको भेजकर और अक्षर देहसे- 'चिकागो प्रश्नोत्तर' -ग्रथ द्वारा वहाँ पहुँचकर जिनशासनका विजय ध्वज फहराया। इससे आपकी शान-शौकतको चार चाँद लगे।

इसके साथसाथ नवमका शनि धर्म-वृद्धि, लोककल्याणकारी सामाजिक क्रान्तिके लिए प्रयत्नशीलता, विश्व बंधुत्व स्थापित करनेके भाव, स्वार्थ एवं निजी सुख प्राप्तिके लिए बेफिकर, उपभोगमें भी त्यागकी भावना आदि प्राप्त करवाता है।

उपरोक्त सर्वगुणपुष्पोंकी हारमाला श्री आत्मानंदजी महाराजजीकी आत्मशोभामें अभिवृद्धि करती थी। इनके जीवन प्रसंगोको अवगाहते समय इन सद्गुण सुमनोंको हम पग-पग पर सुरभि बिखेरते हुए-जीवनोद्यानको महकाते हुए अनुभूत करते हैं। "नवम स्थानका केतु जातकको इतिहास और पुराण शास्त्रोका रसिक और प्रखर वक्ता बनाता है। ध्येयलक्षी और विरोधीओका प्रबलतासे सामना करके सदा विजयी बनता है।" [34]

दसम स्थान-चार केन्द्र स्थानोमें लग्नस्थानके पश्चात् द्वितीय क्रमसे दसम (कर्म) स्थान महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस स्थानसे व्यापारादि एवं राजद्वारी कार्य, राजकीय-सम्मान, पितृसुख, यश-मान-प्रसिद्धि आदि निर्देशित किया जाता है।

इस स्थानमें एक भी ग्रह स्थित नहीं है। वृश्चिक राशि होनेसे कर्मेश मंगल है जो नीचका होने पर भी मित्रग्रह-उच्चके गुरुसे युति संबंधके कारण नीचभंग-राजयोग प्राप्त करता है। उच्चके गुरुकी कर्मस्थानमें पंचम-पूर्णदृष्टि होनेसे यश-मान-प्रतिष्ठा और वाद-विवादमें सदा विजयशीलताकी बक्षिस करता है। जैसे-

रतलाममे सूर्यमलजी कोठारी के साथ ग्यारह या बत्तीस मूलागम ? प्रश्न पर वादमें; अहमदाबादके चातुर्मासमे श्री शान्तिसागरजीसे 'शास्त्रानुसार धर्मपालन करनेवाले साधु या श्रावक के अस्तित्व' विषयक प्रश्न पर शास्त्रीय चर्चामें; भावनगरके चातुर्मासमे वहाँके राजासाहब और उनके वेदान्ती गुरु-स्वामी आत्मानंदजी से "सर्वं खल्विदं ब्रह्म," "अहं ब्रह्मास्मि", एवं "ब्रह्म सत्य-जगन्मिथ्या"- विषयो पर सैद्धान्तिक समन्वयवाले वार्तालापमें; बिकानेरके चातुर्मासमे वहाँके राजा और उनके संन्यासी गुरुके साथ "उत्पाद व्यय-ध्रौव्य युक्तं सत्" को जैन दर्शनके स्याद्वाद सापेक्षवाद, अनेकान्तवादसे-सन्मति तर्क, स्याद्वादमंजरी आदि और जैनेतर-कुमारिल भट्ट, वाचस्पति मिश्र आदिके ग्रथोंके उद्धरण देकर जैन दर्शनका दार्शनिक समन्वय दर्शाकरके उन्हें संतुष्ट एवं प्रसन्न किया; जोधपूरमें जोधपूर नवाब और उनके भाई की 'अनीश्वरवाद और नास्तिकता' विषयक भ्रमजालका पर्दाफास करके; लिंबडी नरेश की 'ईश्वर जगत्कर्तृत्व' विषयक शंकाओका नीरसन करके; अंबालामें आर्यसमाजी कार्यकर्ता पंडित लेखरामजी से भी 'अनीश्वरवादऔर नास्तिकता' विषयक अनेक जैन-

जैनेतर शास्त्रोंके संदर्भ देकर स्पष्टीकरण किया। "ईश्वर जगत्कर्तृत्व" -विषयमें आर्य समाजी ला. देवराज और मुन्शीरामजी से शास्त्राधारित वार्तालापमें संतुष्टी की।- इस प्रकार अनेक जैन-जैनेतरोंसे सम्मान-प्रतिष्ठादि प्राप्त किया।[25]

एकादश-लाभ स्थान है। सत्पुरुषोंकी सेवा, स्व पराक्रमसे लाभ, मित्रोंसे लाभ, आराधना-साधनासे लाभका योग इस स्थानके अभ्याससे ज्ञात होता है।

आपकी जन्म कुंडलीमें एकादश स्थानका अधिपति लाभेश-गुरु उच्चका बना हुआ होनेके कारण उपरोक्त सर्वांगीण लाभ आपके जीवन-दर्पणमें स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। कईबार शिष्यादि प्राप्ति लाभ, कभी धार्मिक स्थानादिके लिए विपुल धनराशि एवं अन्य आवश्यक सामग्रीका आकस्मिक लाभ प्राप्त होता रहता है।

लाभेश-गुरुकी नवम-पूर्ण-दृष्टि धन स्थानमें शुक्र-सूर्यकी युति भी आपके लिए शुभ फलदायी हुई, जिससे कलाप्रियता प्राप्त हुई, और आपका व्यक्तित्व-जीवनपथ-उदारता, सदाचार, दयालुता, पवित्रता, उत्तम निर्णायक शक्ति, अगाध धैर्यादि अनेकानेक गुण कुसुमोंके परिमलसे सुवासित है।

द्वादश स्थान-इसे मोक्ष स्थान अथवा व्यय स्थान कहते हैं। इस स्थानसे रोग-हानि-व्यय-विदेशयात्रा आदिका निर्णय किया जा सकता है।

आपकी जन्मकुंडलीमें इस स्थानमें कोई ग्रह बिराजमान नहीं है। लेकिन मकर राशि है। इसका स्वामी (व्ययेश) शनि है, जो भाग्य स्थानमें उच्चका बनकर बिराजित है। इसके अतिरिक्त व्यय स्थान पर मंगल और गुरुकी प्रतियुति होनेसे अनेक विघ्न-संघर्षादिके बाद भी अंततोगत्वा-चाहे विलंब भी क्यों न हों-विजयशील निश्चित रूप से आप ही बनते रहते थे।

सतत कार्यशीलता-कर्मठता-पुरुषार्थ, कठोर परिश्रम, लगन, भगीरथ प्रयत्न, यम-नियम--संयमसे प्राप्त अतुल आत्मिक एवं बौद्धिक शक्ति, निर्मल भक्ति—इन सर्वका एक नाम अर्थात् शनि-चंद्रकी प्रतियुति। व्ययेश शनिकी भाग्य स्थानसे पराक्रम स्थान स्थित चंद्रके साथ प्रतियुति-आपको, आपके पीछे विश्वको पागल बनानेवाली शक्ति प्रदान करती है। शनिसे प्राप्त भाग्यलाभ स्थिर होता है। शनि-समयका प्रतीक है, शनि-विवेक है शनि-भाग्यविधाता है, शनि-शिव याने कल्याणमय है; बिना शनिका जीवन, बिना एक-आदि-अकके शून्य समान है। शनिके बिना अकेला चंद्र केवल वैचारिक तरंगे उत्पन्न करता है। ठोस कार्य शक्तिके लिए शनिका साथ अति आवश्यक है।- ऐसी प्रतियुति आपके जन्म कुडलीके ग्रहोमे होनेसे ही आपका जीवन 'लाखो मे एक'- सदृश प्रशस्त, प्रशसनीय, अनुमोदनीय बन गया है।

इस प्रकार जन्मकुडलीमे उपचय योग परिवर्तन योग नीचभग राजयोग नव-पचमयोग बलवान लग्नेश (शनि) योगकारक उच्चका शुक्र, उच्चका गुरु शुक्र-सूर्य एव

मंगल-गुरु और राहु-चंद्रकी युति, शनि-चंद्रकी प्रतियुति, उच्चके ग्रहोंकी दृष्टि आदि अनेक कारणोंसे कुंडलीके ग्रह जातकके जीवनको सर्वोत्कृष्टता बक्षते हैं। भाग्य भुवनका स्वामी योगकारक शुक्र उच्चका बनकर सूर्य-बुधसे युति संबंधसे युक्त धनभुवनमें बिराजित है। अतएव भाग्यदेवी विजयमालारोपणके लिए मानो सदैव तत्पर रहती थी।

ग्रहोंके गोचर परिभ्रमणसे असरग्रस्त आपके जीवनके :-महत्वपूर्ण प्रसंगोंका विश्लेषण :-

अद्यावधि पूज्य गुरुदेवके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व एवं जीवन प्रसंगोंका आपकी जन्म कुंडलीके स्थान-राशि-ग्रहके परस्पर संबंधाधीन फलादेशके स्वरूपमें अध्ययन किया गया। अधुना ऐसे उत्कृष्ट व्यक्तित्वधारी विरल विभूतिके अत्यन्त महत्त्वपूर्ण-यादगार जीवन प्रसंगोंको तत्कालीन उन ग्रहोंके गोचर परिभ्रमणके आधार पर यथास्थित समय-संयोग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

यह विशलेषण केवल आपकी ही जन्मकुंडलीको लक्ष्य करके किया जा रहा है। (१) षष्टम अशुभ स्थान स्थित तृतीय एवं दसम स्थानका स्वामी मंगल और द्वितीय एवं एकादश स्थानका स्वामी गुरु परसे, जब राहुका परिभ्रमण होता है तब उन स्थानोका अशुभ फल प्राप्त होता है-तदनुसार आपकी बारह-तेरह, इकतीस-बत्तीस,उनचास-पचास वर्षकी आयुमे अशुभकारी घटनाये घटित होनेकी संभावना होती है - यथा - पारिवारिक जनोंका वियोग या हानि, यश-मान-प्रतिष्ठामें विक्षेप या हानि, साहस-पराक्रम आदिमें निष्फलता प्राप्त होती है। जैसे A. तेरह सालकी आयुमें आपको माता-पिता-परिवार-मित्रवर्गसे वियोग प्राप्त हुआ, और जीरामें जोधेशाहजीके घर जाकर जीवन बसर करनेका प्रसंग प्राप्त हुआ। B. जब आपकी बत्तीस सालकी उम्रथी, आपका अंतर्मन मूर्तिपूजाके प्रति आस्थासे रंग चूका था। अतएव आप स्थानकवासी साधुवेशमें मूर्तिपूजादि सद्धर्मका उपदेश सुनाते थे। यही कारण बन पड़ा कि पूज्य अमरसिंहजीने आपके विरुद्ध एक मेजरनामा तैयार करके सभीके हस्ताक्षर लेकर आपको समुदायसे बाहर करनेका कारनामा रचा (वैसे तो आपके प्रबल पुण्य योगसे ही आपको इस कारनामेका कोई असर नहीं हुआ, लेकिन, मनमे उद्वेग अवश्य रहा) C. उनचास वर्षकी आपकी उम्रथी तब बड़ौदामें होनेवाली लहरुभाई-नामक युवककी दीक्षा, उनकी माताके विरोधके कारण तत्काल स्थगित कर देनी पड़ी। D. पचास वर्षकी आयु थी तब आपने पालीताणामे चातुर्मास किया। उन दिनोंमें वहाँ यतियोंका-विशेष रूपसे 'वीरका' रिखका-जोरदार वर्चस्व था। उन्होने आपके चातुर्मास प्रवेश-महोत्सव जुलूसमें एव चातुर्मासमें-पर्युषण मे कल्पसूत्र के जुलूस में विघ्न डालनेका भरसक प्रयत्न किया-हाँलाकि वह निष्फल हुआ।

२. षष्ठम अशुभ स्थान स्थित तृतीय एवं दसम स्थानका स्वामी मंगल और द्वितीय एवं एकादश स्थानका

स्वामी गुरु ग्रह परसे जब केतुका परिभ्रमण होता है तब उन स्थानोंका आकस्मिक अशुभ परिणाम प्राप्त होता हैं, अर्थात् मिलनेवाले कुछ काल्पनिक लाभके स्थान पर, ऐसा लगता है जैसे कोई ऐसी आकस्मिक घटना घटित हुई और मिलनेवाला लाभ न मिल सका या हानी उठानी पड़ी। तदन्तर्गत परिवार हानि या परिवारके मुख्य व्यक्तिका निधन वा यदि स्वयं मुख्य सदस्य हो तब खुद की मृत्यु होनेकी संभावना होती है।

आपकी आयुके तेईसवें, एकतालीस-बयालीस और साठवें वर्षमे केतुका ऐसा परिभ्रमण हुआ, परिणामतः A. तेईसवें वर्षमें आपको ऐसे ही किसीभी प्रकारका प्रसंग या अचानक बिमारीका प्रसंग प्राप्त हुआ होगा (विभिन्न विद्ज्जनों द्वारा रचित आपके अनेक जीवनचरित्रोंमेंसे किसीमें इसका कोईभी उल्लेख प्राप्त नहीं होता है, लेकिन इस ग्रह भ्रमणसे व्युत्पन्न असर अवश्य ही हुआ होना चाहिए) B. एकतालीसवें वर्षमें आर्य समाजके स्थापक श्री दयानंदजी सरस्वतीके साथमें आपका शास्त्रार्थ आयोजित हुआ था। संभवतः इस शास्त्रार्थ से आपको कीर्तिलाभ या सत्य प्रस्थापित करनेका अवसर प्राप्त होता-लेकिन, अचानक ही श्री दयानंदजी सरस्वतीके विष प्रयोगसे निधनने आपको इस लाभसे वंचित कर दिया। C. बयालीसवें वर्षमे लुधियानामें फैली जीवलेवा ज्वरकी बिमारीने आपको गंभीर असर किया, जिससे आपको बेहोशीमें तत्काल ईलाजके लिए लुधियाना से अंबाला लेजाना पड़ा। इसी बिमारी से ग्रस्त आपके शिष्य श्री रत्नविजयजीका कालधर्म हुआ। D. साठवें वर्षमे केतुके इस परिभ्रमणने, अचानक ही आयुष्यकी समाप्ति प्रदान करनेवाली सांसकी जीवलेवा बिमारीसे आपको परलोकका पथिक बना दिया।

३. षष्ठम अशुभ स्थान स्थित मंगल और गुरु परसे जब शनिदेवका परिभ्रमण होता है तब अशुभ फल प्रदान करता है। यह परिभ्रमण तेईस से पच्चीस और त्रेपन-पचपनके बीचके वर्षोंमे हुआ। A. तेईसवें वर्षमें इस अशुभ स्थान परसे केतु और शनिदेव-दोनो पापग्रहका पसार होना, निश्चित रूपसे अनहोनीका संकेत करता है। आश्चर्य है कि विभिन्न विद्वानो द्वारा रचित एवं प्रकाशित आपके जीवनचरित्रों एवं प्रसंग परिमलों में इसका कहीभी कोई चित्रण या आलेखन प्राप्त नहीं होता है।

B. आपके शिष्य परिवारमें गहरी चोट प्रदाता---त्रेपनवें वर्षका यह भ्रमण आपके प्रिय प्रशिष्य श्री हर्षविजयजी म.का. इसी वर्षमें कालधर्म प्राप्त कराता है, जिससे आपके अपने निजी एवं शासन प्रभावनाके कार्योंमे अनेक कठिनाइयाँ महसूस हुईं।

शनिदेवका मंगल ग्रह परसे परिभ्रमण आकस्मिक साहस और पराक्रमके लिए प्रवृत्त करता है। अथवा व्यक्तिकी सुषुप्त शक्तियोंको जागृत करता है, जिससे भविष्यमे लाभकारी परिणाम प्राप्त होते है। आपके जीवनमे भी जब यह समय आया तब, रतलामके चातुर्मासोपरान्त विवेकचक्षुके उद्घाटन फलस्वरूप आपने चिंतन-मनन-मथनान्तर, व्याकरण पढ़नेका निश्चय किया। तदनुसार पचीसवे वर्षकी आयुमें आपने रोपडमें-गुरुजनोंके निषेधके विरुद्ध-सदानंदजीसे व्याकरण

पढ़ा। जिससे नवीन ज्ञान ज्योतिके उदयसे सत्यमार्गके दर्शन होनेसे भविष्यके जीवनराह पर जबरदस्त परिवर्तनकारी प्रसंगोकी परम्पराका प्रारम्भ हुआ।

४ द्वितीय स्थान स्थित प्रबल योगकारक उच्चके शुक्र परसे गुरुका भ्रमण होता है तब जीवनमें महत्त्वपूर्ण यादगार प्रसंग उपस्थित होते है। यह भ्रमण योग आपके जीवनमे नव, इक्कीस, तेंतीस, पेंतालीस, सत्तावन सालकी उम्रमें हुआ था, परिणामतः

A. जब आप नव वर्षके थे, तब गणेशचंद्रका अंगज स्व-गृहकी रक्षाके लिए हाथमे नंगी तलवार लेकर खड़े हो गए-जो आपके निर्भीक-पराक्रमी व्यक्तित्वका परिचायक था। B. इक्कीस वर्षकी आयुमें आपको बार बार व्याकरणाध्ययनके लिए विभिन्न व्यक्तियों द्वारा प्रेरणा दी गई, लेकिन आपने ध्यान ही न दिया, जिसका अफसोस आपको जीवन-पर्यंत रहा। C. तैंतीसवें सालमे आपने पूज्य श्री अमरसिंहजीके मेजरनामा और समुदाय बाहर करनेके गुप्त कारनामोंको ललकारा और पंजाबमे जाकर अनेक स्थानो पर विचरण करके और उपदेश देकर श्रावक समुदायकी श्रद्धाको सम्यक् एव स्थिर किया। पश्चात् मालेरकोटला का चातुर्मास यादगार और यशस्वी हुआ जिसमें आपको आशातीत सफलता प्राप्त हुई। पंजाबका प्रत्येक स्थान-क्षेत्र-आपके आगमन और स्वागतके लिए लालायित बना हुआ था। D. पैंतालीस सालकी उम्रमे होशियारपुरके चातुर्मासमे आपकी ग्रंथरचनाओमे से जो सर्वोत्कृष्ट रचना 'जैन तत्त्वादर्श' की रचना की, जिसे जैन धर्मकी 'गीता' कहा जा सकता है। E. उम्रकी सत्तावनवी साल आपकी जीवन-किताबका स्वर्णिम पृष्ठ है। इसी वर्ष आपको आंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। इसी वर्ष चिकागोंमे आयोजित विश्व धर्म परिषदमें पहुँचनेका सादर आमंत्रण प्राप्त हुआ। जैन साधु मर्यादाको जानकर आपके प्रतिनिध एवं अक्षर देह को आमंत्रित किया गया। अतः श्री वीरचंदजी गांधी आपके अक्षर देह और ज्ञान प्रकाश को लेकर वहाँ पहुँचे और विश्व स्तरीय अनन्य प्रख्याति प्राप्त करवायी।

५. द्वितीय स्थान स्थित प्रबल योगकारक उच्चके शुक्र पर गुरुकी दृष्टि होने से जीवनमें सफलता प्राप्त-यादगार महत्त्वपूर्ण प्रसंग घटित होते हैं। यह परिभ्रमण आपके जीवन के सोलह-तेईस-सत्ताईस-उनचालीस-इक्यावनवें वर्षमें हुआ था। जिसके कारण -

A. सोलहवे वर्षमें स्थानकवासी गुरु गंगाराम और जीवनरामजीका सत्सग प्राप्त हुआ। आपको संसारकी असारताका भान हुआ और साधु जीवन जीनेका आपने निश्चय किया। B. तेईसवे वर्षमे आपने बत्तीस आगमोका अभ्यास सपूर्ण करके विद्वज्जगतमे शास्त्रोके सर्वेसर्वा-पारगतके रूपमे ख्याति प्राप्त की। इसी वर्ष रतलाममे सूर्यमलजी कोठारीजीको 'आगमो की सख्या' विषयक वादमें अकाट्य तर्क एव युक्तियोसे निरुत्तर करके जीवनमे प्रथमबार 'वाद विजयी' बननेका सौभाग्य प्राप्त किया।

C सत्ताईस वर्षकी आयुमे आपने आग्राके चातुर्मासमे सन्त श्री रत्नचद्रजीसे समागमका लाभ हुआ। आपने अपने मनकी अनेक आशकाओका दिल खोलकर आगमोक्त पाठोके

संदर्भमें चर्चा करके शास्त्रोक्त समाधान पाया। फल स्वरूप मूर्तिपूजा पर आपकी श्रद्धा स्थिर हो गई। विवेक चक्षुके उद्घाटनसे जीवनके सच्चे राहका निर्णय हो पाया। सत्यका निश्चय एव स्वीकार करके उसके प्रचार और प्रसार करनेके लिए कटिबद्ध बने। दिल्ही पहुँचकर विश्नचदजी-चंपालालजी आदि साधुओको अध्यापन करवाके आत्म विशुद्धि एवं सत्य और सनातन जैन धर्मकी प्ररूपणा की। उसीमें प्रवृत्त कराके विश्वासमे लिए। अतः उन सबका अमूल्य सहयोग आपको आजीवन मिलता रहा ।

D. उनचालीसवे वर्षमे फिर वही संयोग प्राप्त हुआ, अतएव आप सभीने ढूंढक-मिथ्या-पंथ छोडकर शुद्ध श्रद्धान् युक्त शाश्वत धर्मकी संविज्ञ दीक्षाको अंगीकृत करके श्री बुद्धिविजयजी महाराजका शिष्यत्व स्वीकार करके आत्मारामजी से मुनिश्री आनन्द विजयजी म. बने और आत्मिक कल्याणके सच्चे मार्गके स्वीकारका परितोष पाया।

E. आपकी इक्यावन सालकी आयुमे इसी शुभ योगमे जीवनमें सर्वोच्च कीर्तिकलशकी प्राप्ति हुई। इस साल पालीताना चातुर्मासकी पूर्णाहूति पर हिन्दुस्तानके सकल जैनसंघ के अग्रणी एकत्र हुए। सर्वने सर्व-सम्मतिसे आपको तपागच्छान्तर्गत संविज्ञ शाखाके आद्याचार्यपदका ताज पहनकर इस पदको अलंकृत करनेके लिए विनती की। आपकी संपूर्ण अनीच्छा होते हुए भी श्री ॰पकी अत्यन्त आग्रहपूर्ण आज्ञारूप विनति को सम्मानित करते हुए आद्याचार्य पदका स्वीकार करके अत्युत्तम पंचपरमेष्ठि स्थित तृतीय स्थानारूढ हुए जो जीवनका उत्तमोत्तम लाभ था।

६. द्वितीय स्थान स्थित सूर्यकी प्रतियुतिमें गुरुका भ्रमण होनेसे भी जीवनमें महत्त्वपूर्ण सफलतायुक्त परिवर्तन करानेवाले प्रसंग उपस्थित होते हैं। तदनुसार आपकी आयुके तेरह-पचवीस-सड़तीस-उनचासवें वर्ष लाभदायी हुए हे। यथा-

A. तेरह सालकी आयूमें आप जीरा निवासी जोधेशाहजीके घर आये। यहाँ पर ही आपको जैन धर्मका परिचय हुआ जिससे आपके जीवनका आमूल परिवर्तन हुआ। आप हिंसक वीरताको त्यागकर अंतरंग शत्रुनाशक ॰॰सक वीर-सावज़ बनकरके स्व-पर कल्याणकारी जीवन-यापन करनेके सौभाग्शाली बने। B पचवीस सालकी उम्रके प्रसंग आगे वर्णित किया जा चूका है। C सडतीस सालकी उम्रमे आपकी अद्भूत कवित्व शक्तिका निखार आपकी रचना 'चतुर्विंशति जिन स्तवन'मे दृष्टव्य है जिसमे भक्तिरसमे ओतप्रोत आपकी विशिष्ट संगीतज्ञताका भी परिचय प्राप्त होता है। D. उनचासवे वर्षकी उम्रमे आपने सुरतमे चातुर्मास किया और हुक्म मुनि नामक साधुके अध्यात्म सार'नामक ग्रथकी शास्त्रीय सत्यताको ललकारा और प्रश्नोत्तरके रूपमे भारतवर्षके सभी जैन-जैनेतर विद्वानोके परामर्श द्वारा इसे मिथ्या ठहराया। इससे आपकी अगम्य कीर्ति प्रकाशमे आयी। इस चातुर्मासमे अनेक प्रभावात्मक कार्य-अनुष्ठानादि हुए। इसके अतिरिक्त ढूंढक साधु रायचदजी→श्री राजवियजी : सुरतके कस्तुरलाल→श्री कुवरविजयजी ॥ पाटनके लहरुभाई→श्री सम्पत विजयजी

की शिष्य रूपमे प्राप्ति हुई। इस प्रकार यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा एवं परिवारादिमें सर्वांगीण वृद्धिका योग प्राप्त हुआ।

७ गुरुका लाभ स्थानमेंसे भ्रमण सुख-सम्पत्ति-प्रतिष्ठादिकी प्राप्ति करवाता है। यह भ्रमण आपकी आयुके सत्रह, उनतीस, बयालीस और चौपन-पचपन वर्षमें हुआ।

A. सत्रह वर्षकी आयुमे आपने ससार त्यागकर सन्यस्त जीवनका लाभ पाया। B. उनतीस वर्षकी आयुमे आपको देशु गाँवमेंसे शीलाकाचार्यजी की 'आचाराग सूत्र'की टीकाकी हस्तलिखित प्रतकी प्राप्ति हुई। इसके अध्ययनसे आपकी श्रद्धा सविज्ञमार्ग पर मज़बूत हुई। सच्चे साधु जीवनके आचारोका ज्ञान हुआ। इसी वर्षमे श्री रामसुखजीसे ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किया। अमृतसरमे श्री अमरसिंहजी से आदर्श जैन धर्म प्रचारसे सम्बन्धित स्पष्ट चर्चा हुई। आपने अपना निर्णय स्पष्टरूपसे प्रथम ही जाहिरमें प्रगट किया। C. बयालीसवे वर्षमे श्री विनय-विजयजी, श्री कल्याण विजयजी, श्री सुमतिविजयजी और श्री मोतिविजयजी-चार शिष्योकी प्राप्ति हुई। D. चौपन-पचपनवे वर्षमे पट्टीमें धर्म प्रचारमे आशातीत सफलता प्राप्त हुई। अनेक जैन-जैनेतरोंको प्रतिबोधित किये। इस चातुर्मासमे 'चतुर्थ स्तुति निर्णय' शास्त्रकी रचना की। जीरामें परमात्माके श्रीमंदिरजीके अंजनशालाका-प्रतिष्ठा महोत्सव और अमृतसर एवं होशियारपुरमे मदिरजीके प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न करवाये।

८ राहुका लाभ स्थान परसे भ्रमण भी सुख-संपत्ति-प्रतिष्ठादिमे लाभ-वृद्धि सूचक है। जिससे आपकी आयुके पच्चीस और तैतालीसवे वर्षमें हुआ-परिणामतः A. पचीसवे वर्षका वृत्तान्त-वर्णन पूर्वानुसार ज्ञातव्य है। B. तैंतालीसवे वर्षमें जीवलेवा ज्वरकी बिमारीके तत्काल उपचारसे स्वास्थ्य लाभ हुआ। अंबालामें श्री वीरविजयजी, श्री कान्तिविजयजी और श्री हंसविजयजी जैसे अत्यन्त सुयोग्य-प्रतिभावान-आपके नामको रोशन करनेवाले तीन शिष्योंकी प्राप्ति हुई।

९ केतुका लाभ स्थानसे भ्रमण अचानक उत्कृष्ट लाभकारी बनता है।

यह भ्रमण आपकी आयुके पंद्रह-तैंतीस-इक्यावन वे वर्षमें हुआ। परिणामतः A. पंद्रहवे वर्षमे आपकी कला-कुशलता-चित्रकारिता आकस्मिक ही प्रस्फुटित हुई। खेल खेलमे बिना किसीसे सिखे, ही हूबबू चित्र बनानेका प्रारम्भ करके आपने अनेक चित्र बनाये जो पूर्व वर्णित है। लेकिन अफसोस इस अमूल्य निधिका उस समय किसीने गौर न किया। B तैंतीसवे वर्षमे धर्म प्रचार-प्रसारमे अभूतपूर्व-आशातीत सफलता यकायक ही प्राप्त हुई। पंजाबका प्रत्येक क्षेत्र आपके आगमन-दर्शन-स्वागतका इच्छुक था। C इक्यावनवे वर्षमे पूर्वोल्लिखित आचार्य पदकी प्राप्ति भी जीवनका सुखद अकस्मात ही था।

१० शनिका लाभ स्थानसे भ्रमण श्रेय प्राप्ति, सफलता, विकास, मर्यादिका आदि उत्कृष्ट लाभ प्रदान करता है जो आपके जीवनमे पचास वर्षकी आयुमे हुआ। अतः जब आप शुद्ध धर्मके प्रचारके लिए कटिबद्ध हुए थे और दृढता दशामे ही गुप्तरूपसे यह कार्य चल रहा था जिसमे आपके गुरु

सहयोगी श्री विश्नचंदजी, श्री चंपालालजी आदि बीस साधु श्री अमरसिंहजीसे नाता तोड़कर प्रकट रूपसे आपसे आ मिले। परिणामतः आपके आदर्श जैन धर्मके प्रचार-प्रसारमें प्रकट रूपसे कार्यान्वित होनेसे आपके कार्यमे ज्वारकी सदृश जोश आया और शीघ्रतासे लक्ष्यकी और बढने लगा।

संन्यासके योगः--- सामान्यतः किसीभी सन्यासीकी जन्म कुंडलीमे किस प्रकारसे ग्रहोंकी स्थिति होती है इसका अभ्यासपूर्ण विवरण श्री चंद्रकान्त पाठक कृत---वि.स. २०५१ 'जन्मभूमि पचाग'में "संन्यासके योग" शीर्षकान्तर्गत लेखमें किया गया है जो अवलोकन-योग्य होनेसे यहाँ हिन्दी अनुवाद रूपमे उद्धृत किया जा रहा है। [36]

सन्यासीकी कुंडलीमें क्या देखेगे ?- जन्मकुडलीमें लग्न त्यागकी भावना, संस्कृतिकी रक्षा, धार्मिक वृत्ति, मोहक व्यक्तित्व, मानवतावादी स्वभाव, आदि देखना चाहिए। चंद्र-गुरु या शुभ ग्रहोंसे संबंधित होना चहिए। तीव्र बुद्धिके लिए बुध और ज्ञानके लिए गुरु-अच्छा होना चाहिए। धनभुवनसे आकर्षक वकृत्व- शक्ति-वाणीका प्रभुत्व होना चाहिए। विशाल जनसमुदाय वा शिष्यगणको वाणीसे प्रभावित करनेकी शक्ति अनिवार्य है। सरस्वती-कृपाके लिए गुरु-बुध एवं धनेश बलवान होना चहिए। चतुर्थ-सुखस्थानसे अंतःकरण दृष्टव्य है। अतःकरणमे ही कल्पनाये-सुख-वृत्ति आदिका जन्म होता है। और पंचम स्थान विद्या भुवनमेंसे पूर्व-जन्म, पूर्वजन्मके संस्कारादि ज्ञात होते हैं। स्त्रीभुवन सप्तम स्थान दूषित हों जिससे दुःखपूर्ण संसार असार भासित होता है और व्यक्ति वैराग्यमय बनता है। भाग्य-धर्म-भुवनसे धार्मिक आस्था, धार्मिक कार्य, धर्मस्थान-मंदिरादिका नूतन निर्माण एवं जीर्णोद्धारादि करनेकी कार्यशक्ति एवं पूर्व जन्म सूचित होता है। धर्म भुवनमे धर्मेश स्वगृही हो तो अच्छा। द्वादश मोक्ष स्थान, मृत्यके बादकी/जीवकी स्थिति स्पष्ट करता है। मंगल ग्रह ईच्छा-पूर्तिकी आशा कराता है, जबकि गुरु आशा-तृप्ति कराता है। बारहवें चंद्र अथवा शनिकी दृष्टि हो-ऐसे योग जैन साधुओंकी कुंडलीमें देखनेमे आता है। गुरु शनिकी युति, प्रतियुति, स्वगृही या उच्चका-प्रबल हो तब आध्यात्मिक शक्ति प्रबल होती है।

लग्नेश भाग्य स्थानमें, भाग्येश पर लग्नेशकी दृष्टि-दीक्षा अंगीकरणका सूचन करता है। लग्नेश या भाग्येश स्वगृही अथवा भाग्येश-लग्नेशका परिवर्तन योग भी हो सकता है भाग्य-भुवनमे तुलाका उच्चका शनि स्वगृही शुक्र और गुरु हो तो सन्यास लेकर सवत्र आदर पाता है। शुभ ग्रहके नवमांशमे चंद्र उच्चका हैं शनि स्वगृही या उच्चका केन्द्र त्रिकोणमे हो गुरु स्वगृही या उच्चका हो तब व्यक्ति चारित्रवान प्रथम कक्षाका सत-जगत्गुरु बनता है जन्मकुंडलीमे उच्च ग्रह पर कर्कके गुरु मीन-तुला-वृषभके शुक्र और कर्कका-वृषभका चंद्र-जैसे ग्रहकी दृष्टि हो तब सर्वत्र आदरपात्र उपदेशदाता बनता है। धर्मश्रद्धा प्रकट करने दुखीके दुःख दूर करने मनोवाछित कामना पूर्ण करने प्रवचन एव प्रेरणा द्वारा धार्मिक कार्योंके लिए सबको प्रेरित करनेवाला होता है।

जन्मकुंडलीमे नवम स्थान धर्माराधना-साधनाके लिए, पचम स्थान पूर्व जन्मकी साधना एव बारहवाँ आध्यात्मिक आराधनाके लिए दृष्टव्य है। पाँच-नव-बारहवे स्थान पर कौनसा ग्रह है और पचमेश-भाग्येश-व्येश कौनसे ग्रह है-इसके बलाबल पर आध्यात्मिक आराधनाका कथन किया जाता है।

चद्र-मन सूर्य-आत्मा, गुरु-धर्मनिर्देशक शनि-वैराग्यसूचक और लग्न-देह, दर्शाते हैं। बलवान लग्नेश-बलवान व्ययेशका परिवर्तन योग भी त्याग भाव अर्पित करता है। शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक-बधन जेलयोग कर्जदारी, समाजसे तिरस्कृति, और मोक्षादि विचार बारहवे स्थान पर से किया जाता है।

सुख भुवन दूषित हो, तब दुःखसे त्रस्त व्यक्ति वैराग्य की ओर झूकता है। व्यय स्थानके निर्देशक अच्छे बलवान और शुभ हो तब उत्कृष्ट वैराग्य उद्‌भावित होनेसे संन्यास लेता है या चाहे संसार त्याग न भी करें लेकिन मानसिक वैराग्यभावना प्रबल होती है।

प्रव्रज्या योगवाली व्यक्तिमें गूढ शास्त्रोकी ओर झुकाव, तत्त्वज्ञान, आत्मज्ञान, व्यवहार्य, नीतिवादी, सिद्धांतवादीता, समाजोपयोगी/होनेकी तत्परता, संशोधनात्मक वृत्ति, सच्चे राहबर, शास्त्रज्ञ-आदि महत्वपूर्ण लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

कर्क, कन्या या मीनका गुरु एक छ आठ, दस ग्यारह या बारहवे स्थानमे हों तब ब्रह्मज्ञान प्राप्तिका सूचक है। सूर्यसे आगे बुध द्वितीय भुवनमें हों तो व्यक्तिमे आध्यात्मिक शक्ति होती है। गुरु-चद्र या गुरु-मंगल वाली व्यक्तिको तीर्थयात्राका अच्छायोग प्राप्त होता है। मिथुन, कन्या या मीनका राहु-तृतीय, पंचम या दसम स्थानमें हों तब व्यक्तिकी अटूट श्रद्धा ईश्वरके प्रति होती हैं। वह भक्तिमार्ग द्वारा ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त करता है।

दसम स्थानमें चंद्र-शनिकी युति, मोह-मायाका नाश करके वैराग्य प्राप्त कराती है। चंद्र-शनि, सप्तम-चतुर्थ-लग्न स्थानमे होनेसे उस स्थानाधारित फल कम हो जाता है। मोहजालका पाश दूर होनेसे स्नेहल-दयावान, एकाग्रचित्त, कृतनिश्चयी, समाधान वृत्तिवाला होता हैं। मातृकारक चंद्रके साथमें शनिकी युति-प्रतियुति मातृसुख कम करती है। बचपनमे ही माताकी मृत्यु या मातृप्रेम मे उणिमता आती है। माताकी उपस्थितिमें भाग्योदय नहीं होता है।

सूर्य-शनि केन्द्रमे या त्रिकोणमे या द्वितीय स्थानमें हो तब लम्बी आयु, शरीरसुख, निर्भयता, तेजस्विता, ब्रह्मचारी एव ज्ञानयोगसे साक्षात्कार पानेके लिए समर्थ होता है। पिताकी : पश्चात् भाग्योदय होता है या पितृसुखमे हानिका सूचक है। गुरु-शुक्रकी युति अलौकिक बुद्धि प्रतिभा अध्यात्म-ज्ञान वाद-विवादमे कुशलता दया-प्रेम-समाज कल्याणके भावयुक्त महत्वाकांक्षी प्रवृत्तिशील गुण ग्राह्य वृत्ति प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान करती है। अनेक साधु सतोकी कुडलीमे गुरु-शुक्रकी युति देखनेको मिलती है। सक्षेपसे यह कह सकते हैं कि--जन्मकुडलीमे लग्नस्थानसे-स्वभाव मनोबल कीर्ति धन स्थानसे-

परिवार, वाणी, पराक्रम भुवनसे अभ्यास प्राप्त वृद्धि, सुख स्थानसे वृद्धावस्थाकी परिस्थिति हार्दिक विचार, पुत्रस्थानसे भविष्यका ज्ञान, आराध्य देव, तांत्रिक विद्या गत जन्मकृत पुण्य, विद्या याददास्त; सप्तमसे दाम्पत्य जीवन-जाहेर जीवन कीर्ति मृत्यु स्थानसे योगाभ्यास, गूढज्ञान, अकस्मात, ओपरेशनादि, भाग्य स्थानसे प्रवास भाग्योदय आध्यात्मिक ज्ञान पूजा धार्मिक क्रिया, पूर्व जन्मकृत कर्म तीर्थयात्रा, गुरु कर्मभुवनसे जाहेर-जीवन सन्यास ईज्जत, कीर्ति, व्यय भुवनसे गति, मोक्ष, लम्बी बिमारी कठिनाईयाँ कर्ज, शय्या-सुख, बधन, गुप्त दुश्मन आदिका सकेत मिलता है।

'सारावली बृहज्जातक'मे संन्यासी के योग दर्शित किये हैं जिसमेसे कुछ महत्वपूर्ण योग संक्षिप्तमे दियेजाते हैं। जिस कुडलीमे जितने ज्यादा योग हो उतनी अधिक मात्रामें सफलता या शक्यता प्राप्त होती है।

प्रव्रज्या संन्यास योगः- (१) शनि अथवा लग्न पर चंद्रकी दृष्टि (२) तीन ग्रह उच्चके, (३) गुरु ग्रह केन्द्र या त्रिकोण स्थानमे बलवान (४) सूर्य और चंद्रके, गुरु और बुधके साथ सम्बन्ध (५) गजकेसरीयोग, (६) पंचमहापुरुष योगमेंसे एक से ज्यादा योग (७) एक राशिमें चार या उससे अधिक ग्रह, (८) भाग्य और व्यय भुवनके साथ शनि और केतुका संबंध (९) लग्नेश एवं कर्मेश चर राशिमें, भाग्येश बलवान-स्वगृही (१०) पंचम-पुत्रस्थान और सप्तम-स्त्रीस्थान पापग्रहसे दूषित हो (११) भाग्येश-कर्मेश, भाग्येश-व्ययेश, कर्मेश-व्ययेश का संबंध-परिवर्तन योग (१२) भाग्य भुवन बलवान, भाग्येश बलवान भाग्येश स्वगृही (१३) लग्नेश उच्चका, केन्द्र या त्रिकोणमे गुरु से दृष्ट अथवा दो शुभ ग्रह-सप्तम या दसम स्थानमे (१४) अनफा योग-चंद्रसे बारहवें स्थानमे ग्रह हो (१५) अष्टम स्थानमे पाँच ग्रह हों; अष्टम या द्वादशवें गुरुकी दृष्टि हों (१६) चर राशिके लग्नमें, केन्द्रमें, गुरु, शुक्र केन्द्रमें हों; तुलाका उच्चका शनि हो तो 'अंशावतार' योग होता है। राजा तुल्य लक्ष्मीवान, तीर्थाटन कर्ता, शास्त्र और आध्यात्मिक क्षेत्रका ज्ञाता होता है। (१७) केन्द्र या त्रिकोणमें चार-पाँच ग्रह स्वगृही, बलवान, उच्चके बनते हों तब अधिक बलवान ग्रहानुसार प्रव्रज्यायोगका फल प्राप्त होता है (१८) भाग्य भुवनमे गुरु हों और लग्न एवं चद्र पर शनिकी दृष्टि हो तब वैराग्यकी शक्यता होती है। (१९) लग्न और भाग्यभुवन पर लग्नेशकी दृष्टि हो, लग्नेश-भाग्येशका परिवर्तन योग हो, लग्नेश-भाग्येशकी युति लग्न या भाग्यभुवनमे हो; लग्नेश-लग्न स्थान मे और भाग्येश भाग्यस्थानमे स्वगृही-बलवान हो। (२०) कर्मभुवनमे सूर्य-चद्र-गुरु निर्बल हो, नीच राशिके या पापग्रहके साथ हो और उस पर शनिकी दृष्टि हो (२१) लग्नेश पर चद्रकी दृष्टि हो या लग्नेश चद्रके साथ हो कर्मेश निर्बल होकर स्त्री भुवनमे हो, धनेश और सप्तमेश सन्यस्त योग करे तब व्यक्ति आसक्तियुक्त सन्यासी बनता है। (२२) शुक्र, सूर्य, मगल और शनि, या चद्र, मगल, गुरु शनि, वा गुरु, मगल, सूर्य, शनि--वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक मकर और मीन राशिमे

हों तो साधु तपस्वी होता है। (२३) जन्म कुंडलीमें एक भावमें चंद्र, बुध, मंगल, गुरु या चंद्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल हों तो विद्वान मुनि-संन्यासी होता है और उनका प्रवचन मननीय होता है। (२४) सूर्य, चंद्र, शुक्र, बुध: या मंगल, बुध, शुक्र, शनि: वा शनि, चंद्र, गुरु, शुक्र किसीभी एक भावमें एक साथमें हों तो व्यक्ति संन्यासी बनता है। (२५) जन्मकुंडलीमें चार--पाँच ग्रह एक ही राशिमें, एक ही भावमें हों और राजयोग के सर्जक हों तब प्रव्रज्या योग प्रबल होता है। अनुयायी-शिष्यवर्ग विशाल होता है। छ-सात ग्रह बलवान होकर एक ही भावमे हों तब साधु होता है। (२६) मीन राशिमें आत्मकारक ग्रह मोक्षका सूचक है। आत्मकारक ग्रहसे बारहवें स्थान पर शुभ ग्रह-चंद्र, शुक्र, गुरू उच्चके हों तब संन्यासी होता है। (२७) सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र उच्चके या स्वगृही हों तब अनुक्रमसे ५१ वर्ष पश्चात् संसार त्याग, विद्वत्ता, ख्याति-सुख-समृद्धि प्राप्ति, जैन साधुत्व, ज्यादा भूख-भिक्षावृत्ति, धर्म स्थानमें तीर्थाटन, वैदक प्रचारी साधु बननेका योग प्राप्त होता है।

उपरोक्त लेखके विवरण एवं पूज्य गुरुदेवकी जन्मकुंडलीके विश्लेषणका सम्मिलित अध्ययन करनेसे ज्ञात होता है कि, एक आध्यात्मिक शक्तिके स्रोत, विद्वान, बहुमुखी प्रतिभाके स्वामी, जगत्पूज्य साधुके योग्य ग्रहादि की स्थिति-संबंध, पूज्य गुरुदेवकी जन्मकुंडलीमे भी प्राप्त होता है। अतः गुरुदेवका उज्जवल-यशस्वी-ख्यातनाम जीवन, जैसे किसी फिल्ममें पूर्वांकित एक एक दृश्य अनुक्रमसे पर्दे पर चित्रित होते है वैसे पूर्वकृत् पुण्याधारित जीवन प्रसंग मानो जन्मसे ही निश्चित ही था ।

अन्तमें महापुरुषोंकी कुछ जन्म कुंडलियाँ उद्धरण स्वरूप प्रस्तुत करके समापन करेंगें ।

महापुरुषोंकी जन्मकुंडलियाँ

	नाम	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
१)	गुरु गोविंदसिंहजी	१	९	१२	१०	१०	१२	११	१०	३
२)	डोंगरे महाराजश्री	२	१२	१	९	११	१०	१०	८	४
३)	जैनाचार्य विजय सूरिजी	२	११	७	१०	१०	४	१०	७	११
४)	आचार्य रजनीशजी	२	८	९	९	९	४	९	९	१२
५)	स्वामी रामदासजी	३	१२	३	८	१२	१२	११	९	११
६)	अरविंद घोष	४	५	९	४	५	४	५	९	२
७)	आद्य शंकराचार्यजी	४	१	३	१०	२	४	४	७	७
८)	स्वामी करपात्रीजी	४	४	५	९	४	४	४	१२	३
९)	जैन साध्वी (कलाश्रीजी)	४	६	१	६	६	५	७	३	३
१०)	महात्मा गौतम बुद्ध	४	१	७	१	२	१	१	१	३
११)	रामानुजाचार्य	४	१	३	५	१	३	१	१	२
१२)	गुरु नानकजी	५	८	२	८	८	६	७	२	९
१३)	जय गुरुदेव	५	६	६	२	६	१	६	८	२

१४) चैतन्य महाप्रभुजी	७	११	५	१०	१२	९	१	८	११
१५) रमण महर्षि	७	९	३	१	८	११	८	१२	९
१६) सत्य सांईबाबा	७	८	३	१	८	१०	८	८	३
१७) श्री वल्लभाचार्यजी	८	१	११	४	१२	४	११	२	५
१८) जैनाचार्य विजय वल्लभ सूरिजी	८	७	८	५	६	३	७	९	३
१९) स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि	९	६	१	४	५	५	४	१०	१२
२०) स्वामी मुक्तजीवनदासजी	१०	६	६	१०	७	४	६	१२	३
२१) मुहम्मद पयगम्बर	११	५	४	१	६	२	३	१	६
२२) रामकृष्ण परमहंस	११	११	४	१०	११	३	१२	७	८
२३) मा आनंदमयी	१२	११	१२	११	१०	४	१	७	११
२४) जैनाचार्य विजय रामचंद्र सूरिजी	७	११	७	१०	१०	४	१०	७	११

चौदह राजलोक

मध्यमें त्रसनाड़ी – १४ राज. लम्बी
१ राज. चौड़ी
स्केल – ०.५ इंच = १ राज (असंख्य योजन)